जन्म 100 शताब्दी

वर्ष 2017

न्यायमूर्ति
श्री जगदीश प्रसाद जैन

कीर्ति शेष...

समाज के गौरव

न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन

जन्म
15 नवम्बर, 1917

स्वर्गवास
17 सितम्बर, 1975

जन्म शताब्दी वर्ष 2017

सादर नमन

न्यायाधिपति नगेन्द्र कुमार जैन
R–3, तिलक मार्ग, सी–स्कीम, जयपुर–302005
wwwjusticenagendrakjain.com

लेखक व सम्पादक

एम.एल. धोंकरिया, जयपुर

भगवान श्री 1008 महावीर स्वामी

।। णमोकार मंत्र ।।

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच णमोयारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम् ।।

OM NAMO ARIHANTANAM
OM NAMO SIDDANAM
OM NAMO AYRIYANAM
OM NAMO UVAJJAYANAM
OM NAMO LOYE SAVVA SAHUNAM

ESO PANCHA NAMOKARO, SAVVA PAVA PANASANO
MANGALANAM CHA SAVVESIM, PADHAMAM HAVEI MANGLAM

Salutations to all the Arihantas of the world
Salutations to all the Siddhas of the world
Salutations to all the Acharyas of the world
Salutations to all the Upadhyayas of the world
Salutations to all the Saints of the world

परमपूज्य सिद्धान्तचक्रवर्ती श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज का मंगल आशीर्वाद

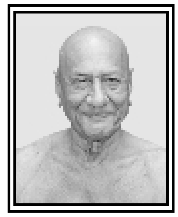

न धर्मो धार्मिकैर्विना

''आत्मानं स्नापयेन्नित्यं ज्ञानवारिणा चारुणा।
येन निर्मलतां याति जनो जन्मान्तरेष्वपि।।''

अर्थ– अपनी आत्मा को नित्यप्रति मनोहारी ज्ञानरूपी जल से स्नान कराते रहना चाहिये। इसके प्रभाव से व्यक्ति जन्मान्तरों तक निर्मलता को प्राप्त करता रहता है अर्थात् निर्मल बना रहता है।

मुझे यह जानकर धार्मिक प्रमोद हुआ कि न्यायाधीश श्री नगेन्द्र कुमार जैन अपने पिताश्री की स्मृति में **'स्मृति शेष'** नामक ग्रन्थ का **'शताब्दी वर्ष'** पर प्रकाशन कर रहे हैं। आपके पिताश्री स्व. न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन समाज के गौरव रहे हैं। उन्होंने समाज में अनेकों महनीय कार्य किए हैं, जिसमें विद्यार्थियों के लिए संघर्ष, श्रीमहावीरजी की रथयात्रा मान्य कराया, **'ईमानदारी व समर्पण से अपना काम करना'** व जोधपुर कोर्ट में महत्त्वपूर्ण फैसले लेना प्रमुख थे। वह अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में उच्च पद पर आसीन रहे।

आपने **'आपके पिताश्री की तरह'** समाज, धर्म और राष्ट्र की जो अभूतपूर्व सेवा की है और उसके विकास में आपका जो अतुलनीय योगदान रहा है। उसको समाज सदैव श्रद्धा के साथ स्मरण करता रहेगा। अभी समाज को आपसे और भी अनेक अपेक्षाएँ हैं। आप स्वस्थ रहें और निरन्तर धर्म और समाज के विकास में अपना योगदान देते रहें। समाज में ऐसे व्यक्तित्व दुर्लभ ही मिलते हैं। अपने व्यक्तित्व, क्रियात्मक-रचनात्मक कार्यशैली एवं सौजन्यपूर्ण व्यवहार से आपने समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है।

आप इसी प्रकार अपने पिताश्री की धार्मिक परम्पराओं को और भी आगे बढ़ायें और निरन्तर स्वाध्याय करते रहें। आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना एवं सफलता के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

शुभाशीर्वाद

20-10-2017

—(आचार्य विद्यानन्द मुनि)

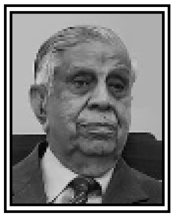

Foreword

M.N.VENKATACHALIAH

Former Chief Justice
Supreme Court of India
'Padmavibhushan'

I am happy to subscribe this Foreword to the Festschrift brought out in honour and memory of the Late Justice Jagadish Prasad Jain, an illustrious judge of the Rajasthan High Court, on his birth centenary year. His illustrious son former Chief Justice of Madras and Karnataka High Courts has done us a service by publishing these essays. The Late Justice Jagadish Prasad Jain whose journey from Alwar, Rajgarh, Jaipur and ultimately to the Judgeship at Jodhpur is a fascinating story of grit and honesty, perseverance and hard-work. Justice Jagadish Prasad Jain died in office ere his time. But as the then Chief Justice of Rajasthan High Court, in a touching reference in court said his memory will be enduring.

From all accounts, Justice Jagadish Prasad Jain's career was illustrious and impressive. From a small village Palam to the High Court at Jodhpur, Justice Jagadish Prasad Jain's journey was marked throughout by one special trait of his personality, namely, his simplicity as a human being and his love and concern for everyone who came within the orbit of his moral influence. These writings bring out Justice Jain as a warm, affectionate and kind hearted person yet just an highly principled.

Eminent contributors share their impressions of their inter-action with this extraordinary personality. Chief Justice Sri. Nagendra Kumar Jain has honoured me by this invitation to me to join in this tribute to the memory of his father who was a great lawyer and a great gentleman.

In these days of growing irreverence and a sense of cynicism lives like that of Justice Jagadish Prasad Jain are a metaphor for what, in the ultimate analysis, makes life worthwhile and its mission enduring.

BANGALORE **M.N.Venkatachaliah**
October 31, 2017

कीर्ति शेष...

समाज के गौरव

न्यायमूर्ति
श्री जगदीश प्रसाद जैन

जीवन परिचय :

भारत में 'सत्यमेव जयते' आदर्श रहा है। यह आदर्श वाक्य प्रत्येक न्यायालय में न्यायाधीश की सीट के पीछे दीवार पर दृष्टव्य होता आ रहा है। यही वजह है कि ''अहिंसा परमो धर्मः'' के अनुयायी जैन (दिगम्बर – श्वेताम्बर) समाज में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया है। देश के दिगम्बर जैन समाज में शिक्षा, न्याय, समाज सेवा की त्रिवेणी स्वरूप थे, महामना न्यायमूर्ति जगदीश प्रसाद जैन (अलवर)। न्यायाधिपति श्री जैन ने न्यायिक सेवा में आजीवन कर्त्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण भावना का परिचय देते रहने के साथ ही समाज में समानता, उदारता, सौहार्दता, संवेदनशीलता जैसे गुणों को लेकर आचरण किया। आपकी विनयशीलता, मिलनसारिता व विश्वसनीयता ने समाज के पिछड़े व त्रसित वर्ग को लाभान्वित किया। अतः हर अवसर पर उन्हें न्याय दिलाने, ऊंचा उठाने व सहारा देने में, आपकी सद्भावना व प्रेम आगे आया। वस्तुतः जैन समाज के इतिहास में सदैव मानवोचित सेवा का यह स्वर्णिम हस्ताक्षर नई पीढ़ी को मार्गदर्शन प्रदान करेगा। प्रतिभावान,

सिद्वान्त प्रिय, समाजसेवी न्यायमूर्ति स्व. जे. पी. जैन का जीवन परिचय पठनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी है।

जन्म व बाल्यकाल :

आपका जन्म 15 नवम्बर, 1917 को हुआ। आपका जन्म स्थान पालम गांव, दिल्ली था। आपके पिताश्री मोहनलाल जी एवम् माताजी श्रीमती मुन्नी देवी जी जिनवाणी के परम उपासक थे। आपका बाल्यकाल धार्मिक वातावरण में बीता। जैन धर्म की जीवनशैली के संस्कार आपके मन मस्तिष्क पर तभी अंकित हो गये, अतः सुन्दर चरित्र निर्माण हो पाया।

पारिवारिक पृष्ठभूमि :–

आपके पिताश्री मोहनलाल जी रेलवे सेवा में पालम रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे। वे अपनी ड्यूटी के प्रति सदैव समर्पित एवं सजग रहते थे तथा ईमानदारी, नेकनीयती व कर्त्तव्यपालन में खरे थे। मां श्रीमती मुन्नी देवी जी परम धार्मिक व व्रत उपवास पालन में सक्रिय रहती थीं। वे घर की विनम्र संरक्षिका थीं।

भाई – बहिन :–

श्री जे. पी. जैन अपने तीन भाइयों एवं तीन बहिनों में सबसे छोटे थे। अतः सबके ही आज्ञाकारी बने रहते थे।

बड़े भ्रातागण :–

1. श्री महावीर प्रसाद – (हैड बाबू – बांदीकुई रेलवे)
2. श्री त्रिलोकचन्द – (बांदीकुई रेलवे)

बड़ी बहिनें :

1. फूल कंवर पत्नी जैनीलाल जी नौगांवा (अलवर)
2. किस्तूरी देवी पत्नी चुन्नी लाल जी नौगांवा (अलवर)

3. चांद कंवर पत्नी खैराती लाल जी, राजगढ़ (अलवर)

शिक्षा :–

मैट्रिक करके राजऋषि कॉलेज अलवर में पढ़ने के बाद सेवानिवृत्त पिता ने रेलवे में आपसे नौकरी करने के लिए कहा, परन्तु आपने नौकरी न कर आगरा में उच्च शिक्षा ग्रहण करने का निश्चय किया। ट्यूशन आदि करके व फिर उच्च शिक्षा के समय एक अग्रेंज प्रोफेसर ह्यूज की मदद से, (जिन्हें वो हिन्दी पढ़ाते थे) आगरा के सेन्ट जॉन्स व आगरा कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की। इसके अलावा आगरा में ही हौम्योपैथी में डिप्लोमा किया।

स्व. जे. पी. जैन की उच्च शिक्षा आगरा के सेन्ट जॉन्स एवं आगरा कॉलेज में हुई। आप शुरू से ही पढ़ाई में कुशाग्र थे, अतः परीक्षाओं में अच्छे अंको से ही उत्तीर्ण होते थे।

आपने बी.ए. सन् 1933 एवं एल.एल. बी. सन् 1935 में उत्तीर्ण की।

आप विधि शिक्षा के अंतिम वर्ष में मैरिट में द्वितीय आये एवं पुरस्कृत भी किये गये।

खेल अभिरूचि :–

आपका खेलों में रूझान स्कूली जीवन से ही रहा। आपका फेवरेट गेम टेनिस व हॉकी रहा। इन्हीं खेलों की वजह से आप स्कूल व कॉलेज स्तर पर अपनी पहचान बना पाये। आपने खेल में खेल भावना (Team spirit) का परिचय दिया। खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार जीते व कॉलेज का नाम रोशन किया।

वकालत के पेशे में आने के बाद भी राजगढ़ के कोर्ट परिसर में पी.एन.माथुर व नैयनानन्द जी के साथ, अलवर में जयकिशन क्लब में टी.एन.गोयल, एफ.सी.रस्तौगी, गोपीनाथ पिल्लई के साथ, जयपुर के जय क्लब में डॉ. एस. के. कक्कड़, प्रोफेसर के. एन.

कक्कड़ श्री हरीश चन्द स्वामी, एडवोकेट, डॉ. पुरोहित के साथ और जोधपुर के उम्मेद क्लब में राजेन्द्र भण्डारी, मिस् पदमनी व वकील साथियों के साथ जीवन पर्यन्त टेनिस खेलते रहे।

प्रथम व्यवसाय : शिक्षा सेवा

आपने दो साल की अप्रेंटिसशिप श्री उमादत्त जी एडवोकेट अलवर के साथ करने के पश्चात सन् 1937 में तहसील राजगढ़ (अलवर) में वकालत शुरू की। थोड़े समय में ही सिविल, रेवेन्यू व क्रिमिनल विषयों से सम्बन्धित मामलों में महारत हासिल कर ली। फिर सन् 1941 में राजगढ़ से अलवर हाईकोर्ट में काम करने के लिए शिफ्ट हो गए। साथ ही हौम्योपैथी द्वारा निःशुल्क इलाज किया, जिसका फायदा वकालत में भी मिला।

अध्ययन में गहन रूचि होने के कारण अपनी प्रतिभा का परिचय अध्यापन में भी दिया। वकालत के साथ–साथ सन् 1942 में अलवर में ही राजऋषि कॉलेज में पार्ट टाईम विधि व्याख्याता का पद ग्रहण कर पाये और विद्यार्थियों को सारगर्भित शिक्षा प्रदान की। आपके विद्यार्थी आपकी अध्यापन शैली व व्यवहार से काफी प्रभावित थे तथा सदैव आपका आदर करते थे।

राज्यों के एकीकरण के कारण जोधपुर में हाईकोर्ट व जयपुर पीठ की स्थापना होने पर 1949 में अलवर से वकालत करने के लिए जयपुर हाईकोर्ट बैंच में आ गए।

विद्यार्थियों के लिए संघर्ष :

जयपुर में लॉ कॉलेज के तत्कालीन प्रिंसिपल डॉ. हजेला द्वारा 10 लॉ स्टूडेन्ट्स की क्लास में उपस्थिति कम होने के कारण उन्हें रेस्टीकेट कर दिया गया तो उनके द्वारा याचिका दायर की गई। जिसमें आपने छात्रों को परीक्षा में बैठने की इजाजत दिलवाई, फलस्वरूप 6 छात्र प्रथम श्रेणी व 4 द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए।

एस.एम. एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर के छात्रों द्वारा नए छात्रों की रैगिंग करने की शिकायत पर प्रिसिंपल डॉ. एस.एस. मेहता द्वारा बिना जांच के छात्र को चांटा मारकर प्रताड़ित कर रेस्टीकेट कर दिये जाने पर हुए छात्र आन्दोलन में हस्तक्षेप कर आपने छात्रों से प्रिंसिपल डॉ. एस.एस. मेहता से माफी मंगवाई, अन्यथा आंदोलन उग्र रूप ले सकता था, इस प्रकार छात्रों की मांग मंजूर करवाकर छात्र आंदोलन समाप्त करवाया।

हाईकोर्ट में वकालत :

इसके बाद 16–जुलाई–1958 को हाईकोर्ट की जयपुर बैंच के उत्सादित (abolish) होने के कारण जयपुर में वकीलों का व समाज का जबरदस्त विरोध प्रदर्शन (एजिटेशन) हुआ। जिसमें पहले वकीलों का प्रतिनिधिमण्डल आपके नेतृत्व में तत्कालीन केन्द्रीय गृहमंत्री के पास दिल्ली गया, परन्तु उनके द्वारा मांग नहीं मानने के कारण आंदोलन ने जोर पकड़ लिया। इस आंदोलन में पहले जत्थे में श्री वेदपाल जी त्यागी की अगुवाई में कुछ अधिवक्ता जेल गए।

इसके उपरान्त दूसरे दिन श्री जे. पी. जैन साहब व आठ अन्य जूनियर एडवोकेट्स भी जेल भेज दिए गए। इनको जेल में 18 दिन की सजा हुई। आंदोलन कई चला और अन्त में जब जोधपुर में जयपुर के वकीलों के प्रकरण अदम पैरवी में खारिज होने लगे तो जयपुर के हाईकोर्ट में पैरवी करने वाले अधिवक्तागण जोधपुर शिफ्ट हुए। तद्न्तर जोधपुर हाईकोर्ट में श्री जे.पी.जैन साहब ने वर्ष 1958 से 1970 तक वकालत के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता हासिल कर नाम कमाया।

बार एसोसियेशन में पद ग्रहण :

सदस्य : राजस्थान बार कौंसिल, जोधपुर (1954 – 1961)
अध्यक्ष : अनुशासन कमेटी, राजस्थान बार कौंसिल,
जोधपुर (1956 – 1970)

अध्यक्ष : राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसियेशन,
जयपुर (1965 – 1968)

सदस्य : भारतीय बार एसोसिएशन, नई दिल्ली (1969 – 1970)

जोधुपर में वकालत के दौरान श्री जे.पी. जैन साहब के प्रयास व प्रेरणा से स्थानीय प्रशासन को इस बिन्दु पर संतुष्ट किया गया कि अधिवक्ताओं को आवासीय भूमि एवं टेलीफोन सुविधा उपलब्ध कराई जाए तभी वे जोधपुर में रह पायेंगे। फलस्वरूप तत्कालीन केन्द्रीय संचार मंत्री, भारत सरकार, श्री राजबहादुर जी (भरतपुर), नगर सुधार न्यास, जोधपुर के तत्कालीन अध्यक्ष श्री तारक प्रसाद व्यास एवं सदस्य श्री मख्तूरमल सिंघवी, अधिवक्ता के प्रयासों से अधिवक्तागण को क्रमशः टेलीफोन सुविधा एवं आवासीय भूमि उपलब्ध कराई गई।

आपके ही प्रयासों के फलस्वरूप राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर द्वारा पारित निर्णयों की साइक्लोस्टाईल प्रति उपलब्ध कराना प्रारम्भ किया गया।

धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र :–

अलवर जैन मंदिर में अध्यक्ष

जोधपुर जैन मंदिर–अध्यक्ष

श्रीमहावीर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र प्रबन्धकारिणी कमेटी में सदस्य (3 फरवरी 1958 से 17 सितम्बर 1975) व कानूनी सलाहकार

आपने समाज में एकता व आपसी प्रेम रखने का प्रयास किया। रूढ़िवादिता व हठधर्मिता से दूर रहे। महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया ।

बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका में सफलता :–

जब आप अलवर में प्रैक्टिस में रहे थे तब पत्रकारों व अन्य लोगों की गिरफ्तारी के विरुद्ध हाईकोर्ट में आप द्वारा याचिका

दायर की गई। न्यायालय ने उनकी याचिका स्वीकार कर उन गिरफ्तार लोगों को मुक्त किये जाने के आदेश दिये। इस प्रकार आपने न्याय के लिये संघर्ष करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री महावीरजी रथयात्रा को मान्यता :–

आपने श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, हिण्डौन से संबंधित कई प्रकरणों में पैरवी करने के साथ–साथ संस्था को कानूनी सलाह भी दी। महावीर जयन्ती के अवसर पर कृष्णा बाई के मंदिर का या श्री महावीरजी क्षेत्र का रथ निकलेगा ? इस विवाद में कृष्णा बाई की तरफ से श्री टीकाराम जी पालीवाल ने तथा श्री महावीर जी क्षेत्र की तरफ से श्री जे.पी. जैन साहब ने पैरवी की। जोधपुर हाईकोर्ट ने यात्रा के दिन पूर्व की भांति श्री महावीर जी क्षेत्र का रथ निकालने का निर्णय 2 अप्रैल, 1958 को पारित किया। इसी निर्णय के अनुरूप व्यवस्था आज तक विद्यमान है।

कतिपय विशेष प्रकरणों में पैरवी व उपलब्धियां

सत्य निष्ठा के साथ विधि एवं न्याय क्षेत्र में कार्य :

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, बम्बई एवं केसरियानाथजी मंदिर व अन्य मंदिरों से संबंधित मामलों में कानूनी सलाह देकर उनकी ओर से निःशुल्क पैरवी की । केसरिया नाथ जी मंदिर के मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट में क्षेत्र की तरफ से पक्षकार बनने के आवेदन में श्री एम.सी. सितलवाड़, सीनियर एडवोकेट को सहयोग प्रदान किया।

गोलेच्छा प्रोपर्टीज कम्पनी प्राईवेट लिमिटेड में करीब 3000 क्रेडिटर्स की एक एसोसियेशन गठित कराई एवं न्यायालय से लिक्विडेटर की नियुक्ति करवाकर धीरे–धीरे उनके जमा पैसे उन्हें दिलवाए।

राज्य सरकार द्वारा विभिन्न विभागों के नियम बना देने के

कारण डॉक्टर्स, अकाउन्टेन्टस्, सहकारिता विभाग व शिप एण्ड वूल डिपार्टमेंट के ऑफिसर्स के साथ ही अन्य विभागों के अधिकारी/कर्मचारीगण द्वारा वरिष्ठता निर्धारण के सम्बन्ध में प्रस्तुत याचिकाओं में पैरवी कर उनको न्याय दिलवाया।

ट्रांसपोर्ट में परमिट सम्बन्धी व राज्य भर में कई मार्गों की नेशनलाइजेशन स्कीम्स लाने की वजह से ट्रांसपोर्ट ऑपरेटरों द्वारा की गई विभिन्न रिट याचिकाओं में सफलता प्राप्त की।

सेल्स टैक्स व विशेषकर वालकर अजरिया प्राईवेट लिमिटेड, राजकोट तथा अहमदाबाद के कोल किंग कहलाने वाले हिम्मत लाल एण्ड कंपनी के प्रकरणों में सफलता प्राप्त कर उन्हें तार्किक सफलता दिलवाई।

इसी प्रकार चुनाव याचिका बद्रीप्रसाद बनाम सतीशकुमार, व बलवीर सिंह बनाम पी. के. चौधरी व चुनाव के कई अन्य मामलों में सफलता अर्जित कर चुनाव कानून के महत्वपूर्ण बिन्दु निर्णित करवाये।

महत्वपूर्ण निर्णय जिन्हें जोधपुर उच्च न्यायालय द्वारा बहाल रखा गया :–

न्यायमूर्ति जे. पी. जैन ने अपने 5 वर्ष के (12 अगस्त 1970 से 17 सितम्बर 1975) अल्प सेवा काल के दौरान कई महत्वपूर्ण फैसले किए।

न्यायमूर्ति जे. पी. जैन ने न्यायालय में कई मुकदमे दिनांक 12 सितम्बर 1975 को सुने व ऑर्डर पास किए परन्तु 4 अंतिम बहस के प्रकरणों के फैसले कोर्ट में लिखवाने के बावजूद उन पर दस्तखत नहीं हो सके और वे उसी रोज दिल्ली अपना मेडिकल चैकअप करवाने के लिए चले गए। एम्स की डॉ. पदमावती ने निरीक्षण के बाद उनका स्वास्थ्य सही बताया इसीलिए वे 14 सितम्बर 1975 की रात को जोधपुर आ गए। अकस्मात हार्ट अटैक से दिनांक 17 सितम्बर 1975 की रात को आपका निधन हो गया।

उल्लेखनीय है कि उक्त 4 फैसलों पर दस्तखत नहीं होने के कारण रिट याचिकायें दायर हुईं, जो माननीय न्यायमूर्ति कानसिंह जी परिहार साहब, जोधपुर उच्च न्यायालय की खण्डपीठ द्वारा सुनी गई। रिट याचिका खारिज की गई, क्योंकि ओपनकोर्ट में उक्त फैसले लिखवा दिये गये थे। अतः दुबारा सुनने के स्थान पर नियमानुसार रजिस्ट्रार के दस्तखतों से फैसले जारी किये गये।

बार कौंसिल, राजस्थान की तरफ से मखतूरमल जी की चैयरमैनशिप के दौरान श्री जे.पी. जैन साहब जिस कोर्ट में बैठते थे, उसमें उनके पोर्टेट का अनावरण तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश श्री डी. पी. गुप्ता ने किया ।

अलवर बार एसोसिएशन में भी तत्कालीन अध्यक्ष श्री अमीचन्द गुप्ता, सचिव, श्री श्रीचन्द यादव, की उपस्थिति में श्री ई एस वैंकटरमैया, न्यायमूर्ति , सुप्रीम कोर्ट व जस्टिस वी.एस.दवे, राजस्थान हाईकोर्ट ने 2 सितम्बर 1984 को जस्टिस जे. पी. जैन के छायाचित्र का अनावरण किया।

माताश्री : अनुकरणीय मार्गदर्शन :–

आपकी माताजी ने आपको श्रेष्ठ संस्कार दिए। उनके द्वारा आपके बहुआयामी व्यक्तित्व को विकसित करने हेतु खेलने, पढ़ने, अच्छा खाना खाने, नई चीजें देखने व सीखने तथा दूसरों को प्रोहत्साहित करने की प्रवृति के साथ ही अपने काम के दौरान ही तरोताजा बने रहने की विधि व गुण भी दिए गये।

धर्मपत्नी का सहयोग :–

आपकी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जैन एक सरल स्वभाव की करूणामयी, निर्मल व संतोषी महिला थी। उन्होंने आपके हर कदम पर शालीनता व सहजता के साथ सहयोग प्रदान किया। यही वजह है कि आपकी सन्तानों में उन्हीं संस्कारों को आज भी देखा जा सकता है।

चिरस्मरणीय व्यक्तित्व :—

न्यायमूर्ति स्व. जे. पी. जैन बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मध्यम परिवार में जन्म लेने के बावजूद अपने संकल्प, आत्म विश्वास, लगन, मेहनत व कर्म में विश्वास रखने के कारण उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति के पद पर पहुंचे।

आपके व्यक्तित्व में ईश आस्था इस मायने में स्पष्ट परिलक्षित होती थी कि आपने सच्चाई के लिए ही कानून का प्रयोग किया सभी के प्रति समभाव बनाये रखा। आपने कभी भी सिद्धान्तों से हटकर गलत बात का साथ नहीं दिया ।

आपका सम्पूर्ण जीवन सादगी, निर्भयता, दयालुता, सहृदता व आत्मानन्द से ओतप्रोत रहा। उक्त सभी विशेषताएं नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक हैं।

शिक्षा, न्याय व समाजसेवा के प्रति समर्पण आपके जीवन का अभिन्न अंग रहे। भगवान महावीर के प्रति आस्था ने आपको आत्मबल प्रदान किया और निरन्तर आगे बढ़ाया । वस्तुतः आपकी कार्यशैली में कर्मयोग का यह सिद्धान्त स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्तकर्मणि ।।2/47

तेरा कर्म करने में ही अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तू कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।

एम.एल. धोंकरिया, जयपुर

परिवार नामवली

पुत्र-पुत्रवधु-

- न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन–स्व. अरुणा जैन
- डॉ. अरुण–स्नेह
- अशोक–सविता
- मंजू (पत्नी स्व. अनिल)

पौत्र-पौत्रवधु-

- एडवोकेट गौरव–सोनू
- अभिषेक–स्नेहा
- अनंत–पदमा

पौत्र-

- कपिल, अंकित

पुत्री-दामाद-

- सरोज–डॉ. अशोक
- मीना (पत्नी स्व. डॉ. सुधीर)
- डॉ. वीना–डॉ. गौतम

पौत्री-दामाद-

- गरिमा–नितिन
- दीप्ति–आशिक

दोहिता-दामाद

- दिव्या–विनीत
- डॉ. कोमल–डॉ. राहुल
- डॉ. नलिनी–डॉ. आशुतोष

दोहिता-

- डॉ. राघव–पल्लवी
- अमित

दोहिती-

- शिल्पा

बच्चे-

- तन्मय, आदित्य, मुदित, अनूव, ओम, आर्यन, आरव
- तान्या, दीया, गुल

स्मृतियां व श्रद्धासुमन

(जन्म शताब्दी वर्ष 2017)

अणुक्रमणिका

क्रम	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	न्यायमूर्ति श्री दलवीर भंडारी, जज इन्टरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस, हेग–नीदरलैण्ड	18
2.	न्यायमूर्ति श्री टी.एस. ठाकुर, मुख्य न्यायाधिपति, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली	19
3.	न्यायमूर्ति श्री पी.एन. सिंघल, मुख्य न्यायाधीश, राजस्थान हाईकोर्ट, जोधपुर दिनांक 19–9–1975 व उच्चतम न्यायालय के जज रहे	20
4.	न्यायमूर्ति श्री एन.एम.कासलीवाल, उच्चतम न्यायालय	22
5.	न्यायमूर्ति श्री शिवराज वी. पाटील, उच्चतम न्यायालय	23
6.	न्यायमूर्ति डॉ. ए. आर. लक्षमण, उच्चतम न्यायालय	24
7.	न्यायमूर्ति श्री ए.के. माथुर, उच्चतम न्यायालय	26
8.	न्यायमूर्ति श्री गणपत सिंह सिंघवी, उच्चतम न्यायालय	29
9.	न्यायमूर्ति श्री एन.एम.टिबरीवाल, पूर्व कार्यवाहक राज्यपाल, राजस्थान	31
10.	न्यायमूर्ति श्री एस.एन. भार्गव, मुख्य न्यायाधिपति, सिक्किम हाईकोर्ट	33
11.	न्यायमूर्ति वाई.आर.मीणा, मुख्य न्यायाधिपति, गुजरात हाईकोर्ट	34
12.	न्यायमूर्ति श्री वी.एस.दवे, राजस्थान हाईकोर्ट	35
13.	न्यायमूर्ति श्री पानाचन्द जी, राजस्थान हाईकोर्ट	39
14.	न्यायमूर्ति इन्द्रसेन इसरानी, राजस्थान हाईकोर्ट	42
15.	न्यायमूर्ति श्री बलवन्त अरोड़ा, राजस्थान हाईकोर्ट	43
16.	न्यायमूर्ति आर. पी. सक्सेना, राजस्थान हाईकोर्ट	45
	अधिवक्तागण	
17.	एडवोकेट जरनल, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर दिनांक 19–9–1975	47
18.	चैयरमैन, बार कोन्सिल, राजस्थान, जोधपुर दिनांक 19–9–1975	48
19.	अध्यक्ष, राजस्थान हाईकोर्ट बार एसोसिएशन, जयपुर दिनांक 19–9–1975	49
20.	श्री सागर मल मेहता, सीनियर एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर	50
21.	श्री एन.एम.रांका, सीनियर एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर	52

क्रम	विवरण	पृष्ठ सं.
22.	श्री जे.के. सिंधी, सीनियर एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर	54
23.	श्री ए.के.भण्डारी, सीनियर एडवोकेट, राजस्थान हाईकोर्ट, जयपुर	56
24.	श्री एम. एल. पंवार, एडवोकेट, जोधपुर	57
25.	श्री प्रकाश चन्द जैन, एडवोकेट, अलवर	59
26.	श्री सीताराम जोशी, एडवोकेट, जयपुर	60
27.	श्री ओम प्रकाश प्रधान, एडवोकेट, कुचामन, नागौर	62
	विद्वतजन एवं मित्रगण	
28.	देवर्षि श्री कलानाथ शास्त्री, सेवानिवृत प्रोफेसर, संस्कृत कॉलेज	64
29.	डॉ. प्रतिभा एस. भार्गव, सेवानिवृत एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय	66
30.	श्रीमती डायना एम. कैपन, कोयम्बटूर	68
31.	श्री गोपी कृष्ण सिद्धा, सचिव, जयपुर पब्लिक स्कूल, जयपुर	70
32.	श्री एन.के. कौशिक, सेवानिवृत एस.ई., जयपुर	71
	परिवारजन	
33.	डॉ. टी. पी. जैन, सेवानिवृत प्रोफेसर, प्रिवेन्टिव एवं सोशल मेडीसन एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज	74
34.	प्रो. एस.पी.जैन, सेवानिवृत प्रोफेसर, प्रिसिंपल, राजस्थान कॉलेज	76
35.	डी. के. जैन, सेवानिवृत सीनियर रेलवे गार्ड, आबूरोड	78
36.	श्रीमती सरोज, सेवानिवृत प्रोफेसर, बॉयोकेमेस्ट्री, एस.एम.एस.मेडिकल कॉलेज, जयपुर	80
37.	श्रीमती मीना घीया, जयपुर	82
38.	डॉ. वीणा जैन, जाम्बिया	83
39.	डॉ. अरूण जैन, सेवानिवृत सीनियर डेन्टल सर्जन, जयपुर	84
40	श्री अशोक जैन, सेवानिवृत अधिकारी, राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर	85
41.	न्यायमूर्ति नगेन्द्र कुमार जैन	87

Dalveer Bhandari

Judge
International Court of Justice
Padambhushan

I started my professional career in the Rajasthan High Court, Jodhpur and during that brief period I had the good fortune of witnessing Justice J.P. Jain functioning as a Judge of the High Court. I distinctly recall that he was one of the most respected and admired judges of the Rajasthan High Court. Due to his sheer hard work and industry, quick grasp and sound clear fundamentals he became one of the most popular judges in a short period. Though as a judge the tenure of Justice Jain was relatively short but even then in a short period he made tremendous contribution to the development of law and jurisprudence.

Socrates had said that there are four qualities of a great Judge. A Judge must hear courteously, answer wisely, consider soberly and decide impartially. Justice Jain was an embodiment of all those qualities. He also possessed a pragmatic approach and robust common sense.

Justice Jain possessed great equanimity. He was universally loved, respected and admired. I vividly remember he had a smile for all and a frown for none. The unfailing courtesy, humility, graciousness and patience were innate qualities which came to him naturally.

Justice Jain, because of his sterling qualities fo integrity and impartiality was equally respected by his colleagues, lawyers and litigants.

On 15 August 1985 a statue of justice M.C. Chhagla a distinguished former Chief Justice of the Bombay High Court was unveiled outside the Chief Justice Court (Court no 52) where he presided over for 11 years with these words inscribed at the base.

"A great Judge,

A great citizen,

and above all a great human being"

Justice J.P. Jain possessed all these qualities. His life and work would be a great inspiration for generations of lawyers and judges.

- Justice Dalveer Bhandari

Justice T.S. Thakur
Former Chief Justice of India
Supreme Court of India

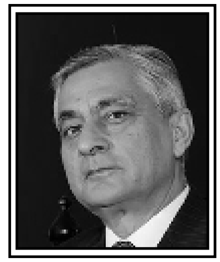

I have never had the good fortune of meeting or working with Late Justice J. P. Jain, Judge High Court of Rajasthan. But what I have heard about him from those who knew him well, I can say that he was not only an outstanding judge respected for his scholarship, courteous behaviour in the court and his impeccable honesty but a great human being who continues to be remembered by his friends and admirers long after he has departed from the mortal world. Justice Jain's tenure at the bench in Rajasthan cut short by his untimely demise is noticeable not only for the extensive work that he did as a judge but also for the contribution he made to the development of jurisprudence. His son Justice N. K. Jain former Chief Justice of High Court of Karnataka has done a great service to the memory of his father by publishing his biography which will in a great measure refresh the association of this popular judge with the members of the bar and bench alike. I compliment Justice N. K. Jain for the effort that he has made and hope that the book is received well by the legal fraternity not only in the state of Rajasthan but in other states as well.

Justice T. S. Thakur

A good way has a good End
The right conduct is the only real Religion.

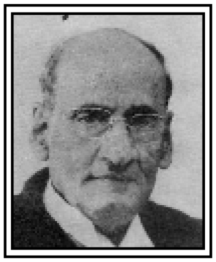

Court Reference in memory of
Late Mr. Justice J. P. Jain on
Friday the 19th September 1975
in Court room No. 1
Tribute By Hon'ble Mr. Justice P. N. Singhal
Chief Justice of Rajasthan on 19.9.1975

My Lords, Mr. Additional Advocate General, Vice Chairman of the Bar Council and Presidents of the Bar Associations.

We are meeting here today under the surrounding and pervading gloom of a great tragedy. The Hon'ble Mr. Jagdish Prasad Jain is no more. He has left for his heavenly home. In the midst of a promising career as a Judge of this Hon'ble court, he was taken ill a couple of days ago, while on his way to Jodhpur. There was nothing particularly wrong with his health, But when I heard that he was a little unwell, I went directly from the Court to his residence in the evening. He was quite his usual self – happy and cheerful – and, when I left him, I had no reason to think that I was seeing him for the last time. But, as misfortune would have it, I learnt soon after that he was no more. The news was so sudden and tragic that it had stunned us all – for it was nothing less than a calamity.

The Hon'ble Mr. Justice J. P. Jain was born on November 15, 1915. He was educated in Raj Rishi College, Alwar, St. John's College, Agra and Agra College, Agra. He was enrolled as an advocate in Alwar and soon earned a name and a place for himself in that highly competitive profession. He practiced in Rajgarh, Alwar, Jaipur and Jodhpur until he was appointed as an Additional Judge of this Hon'ble High Court with effect from August 12, 1970. He was appointed to be a permanent Judge with effect from 8th August, 1974.

It was my good luck and privilege to have known Mr. Justice J. P. Jain for most of my life, for we were together in the same class in Raj Rishi College. Alwar and as it happened, we were together for some time in Rajgarh where I had the pleasure of hearing his arguments almost every day. As chance would have it, we moved from Rajgarh to Alwar the same day and by the same train, and then followed a friendship which, to my great misfortune, has been snapped so suddenly and rudely, leaving me striken and desolate.

But I am not grieving today at my personal loss and bereavement. A man gets what he deserves and I have perhaps no right to complain if an old friend has chosen to leave me behind. But I grieve for the loss of this Hon'ble Court, for it has lost a great and a devoted Judge who shed luster all round and tried hard to make this Court what it is today. He was an architect who made a substantial contribution to the making of this Court and it is no exaggeration to say that there is a niche in the edifice for him which will endure for ever.

I and my brother Judges grieve at our great and irreparable loss. But it would not be a fitting tribute to the departed soul if we merely lament and mourn in our distress and despair. What is proper is to chant hymns, for in ceasing to be numbered which mortals the Hon'ble Mr. Justice Jagdish Prasad Jain has entered upon the heritage of diviner life.

May God grant peace to the departed soul and give Mrs. Jain and the bereaved family the strength to bear the great loss.

Amen !

Courtesy– High court

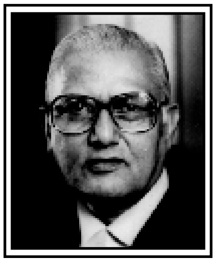

Justice N.M. Kasliwal
Former Judge,
Supreme Court of India

Jagdish Prasad Ji Jain (popularly known as J.P. Jain) shifted to Jaipur and took house on rent of Shri Khemchand Ji in Rasta Haldiyan. I lived in nearby Rasta Gheewalan and Khemchand Ji being my close relative, I frequently visited his house and soon came in contact of Shri J.P. Jain and his family. In 1958, on formation of Unified High Court at Jodhpur, Shri J.P. Jain also shifted to Jodhpur at 36, Pologround. He was kind enough to accommodate me and Late Justice M.C. Jain till I got my house on rent and Shri M.C. Jain later shifted to Ajmer. He treated me and my family very affectionately.

Shri J.P. Jain was a strict disciplined man, hard taskmaster and maintained punctuality in life. He loved playing tennis and self driving his Fiat car. It used to take him 6 hours to reach Jaipur with one halt of ½ hour at Ajmer. I used to travel with him to Jaipur and he was so punctual that it was never even 15 minutes late or 15 minutes early. He was a great supporter of girl education and gave high education to his three daughters.

Shri J.P. Jain had no Godfather in judiciary and by his own merit and success in the legal profession he was elevated to the Bench. I remained closely associated with him while in the legal profession at the Bar and assisted him in many cases. He thoroughly studied every case and his drafting was superb.

He was soft spoken and independent, having robust common sense. It was difficult to get a second appeal and revision to be admitted in his Bench. He always encouraged young lawyers.He possessed high qualities of nobility and believed in aristocrat sort of living. He always practiced in life what he preached.

On the occasion of 100th birth centenary, I pay my respectable homage to him.

- Justice N.M. Kasliwal

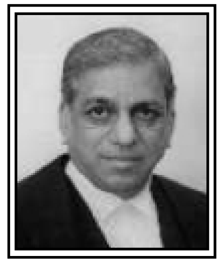

Justice Shivraj V. Patil
Former Judge,
Supreme Court of India
Former Member National Human Rights Commission

I had no occasion or opportunity to know Late Justice J. P. Jain, but I know his worthy son Justice N. K. Jain as we were together in the High Court of Madras, he was Chief Justice of High Court of Karnataka and I was Chief Justice of High Court of Rajasthan.

From what I could gather from the messages and writings of few eminent persons, Late Justice J. P. Jain was a great judge and a good human being. In my view, one has to be basically a good human being in order to be a good judge. Justice J. P. Jain stood and argued well as an advocate and sat and judged well as a judge. He was never overawed by stature of an advocate appearing before him in court and rightly so in my opinion. In delivery of justice none else and nothing else should matter except the merit of the matter itself.

In short and substance, I may say he was blessed with sharp intellect coupled with hard work, legal acumen, courage, fairness, compassion and humility. He treated others as he expected others to treat him. He helped, trained and encouraged many junior advocates. The one who helps others to grow, himself grows to a higher level without his knowledge.

Life and work of such persons, in my opinion, shall be great inspiration to others to follow, more so, when presently there is scarcity of role models in all walks of life. I thank Justice N. K. Jain for providing me this opportunity to say a few words about a great judge and a great human being, Late Justice J. P. Jain.

Justice Shivraj V. Patil

Dr. JUSTICE AR. LAKSHMANAN
Former Judge Supreme Court of India
Former Chairman Law Commission of India.

This occasion gives me an opportunity to pay homage to the memory of late Shri J.P.Jain who not only an expert lawyer, but also who combined in himself qualities of an academician and philanthropist.

I deem it my privilege to have secured an opportunity to pay my heart felt tribute to late Shri Jain.

Justice N.K. Jain, former Chief Justice of Madras High Court has earned the affection and goodwill of the Madras Bar and Bench. We became good friends. I therefore, thought fit to write this message to a worthy father of a worthy son. I had no occasion to see the great son of the soil but I have learnt from others that late Shri Justice J.P. Jain was exceptionally outstanding as a Lawyer and remarkably efficient as a Judge.

I was told his court-craft was far excellence. Late Mr.Justice Jain is an institution personified. Extolling Justice Jain is like singing hymns in praise of the sun. The Sun burns bright and gives light to the universe irrespective of any price. Justice Jain is a colossus who shines sans praise or flattery.

To narrate the forensic skill and dexterity which Justice Jain displayed would be a replay of a recorded cassette.

As I said earlier, I had no occasion to see the great soul practicing as a lawyer and functioning as a Judge of Rajasthan High Court. But, I have learnt from others that Justice Jain was exceptionally outstanding and remarkably efficient as a Judge. His court-craft was par excellence.

Socrates said four things to make a great judge – to hear courteously, to answer wisely, to consider soberly and to decide impartially.

By example and percept Justice Jain is known for his scrupulous adherence to this Socratic dictum.

Justice Jain's life is message to the future, his example and good deed remain with us as his legacy. His illustrious son Justice N.K. Jain, Chief Justice of Madras High Court made us all to celebrate the saga of his father's life as a source of inspiration to all of us.

Generally Judge of the Judicial hierarchy have worked with one common interest, that is to be fair between men and men, accurate to the best of their abilities in the application of law, always alive to the fact that "the law is the good son of the arch of liberty "

Late Justice Jain was no exception to this general rule. He held the scale evenly, not merely between all manner of men but also between the state and the citizen as a whole.

Noble men are made nobler by their thoughts and actions and such noble men are the sons of God. To that fraternity belongs the most respected late Justice Jain. His illustrious son Justice N.K. Jain whose forte is benevolence and charity has laid firmer foundations to achieve the motto of his late father with courage, integrity and faith.

I conclude this message to convey my respects to the members of late Jain's family for a bright and purposeful career and to emulate the time example of Late Justice Jain.

I was the Judge of the Madras High Court, Chief Justice of Kerala High Court, Chief Justice of Rajasthan High Court and Chief Justice of Andhra Pradesh High Court, Judge of the Supreme Court of India and the Chairman of the Law Commission of India. I can say without fear of any contradiction that I enjoyed every minute of my stay in all these courts and had the fullest support of the members of the legal fraternity and the brother Judges.

Dr. JUSTICE AR. LAKSHMANAN

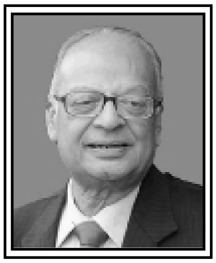

Justice Ashok Kumar Mathur

Former Judge, Supreme Court of India
Former Chairman, Armed Force Tribunal
Former chairman, Seventh Central Pay Commission

I am happy to record that worthy son of the worthy father is going to bring memorial on centenary celebration of Justice Jain Saheb. The journey of Justice J.P. Jain Sahib from Alwar to Jaipur and Jaipur to Jodhpur was long and arduous one. Justice J.P. Jain Sahib started his career as an Advocate from Alwar, then shifted to Jaipur and ultimately landed in Jodhpur, the main seat of Rajasthan High Court.

I knew Justice Jain Saheb only when I was enrolled as Advocate of Rajasthan High Court in 1966. At that time Jain Sahib was a Senior Advocate of Rajasthan High Court in his full glory. My association with him was not very close. I had an interaction with him in number of the cases as a Government Advocate. Justice Jain Saheb had a large practice of service matters and transport . At that time he had a large Transport Practice and much sought after Advocate.

As a Government Counsel, I had to appear against him in a number of cases. During 70's, the Road Transport was nationalized and all major routes were sought to be acquired by the State Road Transport Corporation and that ensued a large litigation against such attempt of nationalizing. The permit holders of such route challenged by filing number of writ petitions.

He was one of the Senior Counsels & was representing such permit holders. I was appearing on behalf of the State. I can say without mincing the words that it was a great learning for a young lawyer like me. Finer points of law were debated. During debate some times we had serious discussions but he always spared me taking me to be a young Lawyer. He never discouraged me, but always encouraged me and some times affectionately patted outside Court and said a word of praise for my tenacity.

After sometime, his merits were recognized and he was elevated to the Bench. I had occasion to appear before him and argue over several matters and I remember one, a service matter under the Medical Service Rules, which needs to be mentioned here. Shri M.B.L. Bhargava, an eminent Counsel of Rajasthan was appearing for one party and I was opposing the same as a State Counsel, Bench was presided over by Mr. Justice Chand Mal Lodha and Mr. Justice J.P. Jain. The matter was hotly contested and the Health Minister specially asked me to appear and see that the case is properly represented before the Bench. I was assisted by an Assistant Secretary, Medical & Health.

We had a serious debate in the matter and Court felt persuaded with the arguments of Late Shri M.B.L. Bhargava and was not impressed by all my efforts.

The Government was insistent that we should not lose this case as it will effect all over the State. There was no option but to amend the Rule. For amending rule we required time. Therefore, I prayed for time to study the matter further to assist the Court. But Mr. Bhargava opposed the request for adjournment as matter was fully argued and nothing remained.

Mr. Bhargava anticipated that if time is given then Government can amend the Rule and defeat the petitioner. I was sounded by the Court that when matter is subjudiced no attempt should be made to amend the Rule. However, I could not assure the Court because amendment was privilege of the Government and it was a sovereign function.

At the same time Court could not prevent the Government from doing so. Justice Jain Saheb was sitting with the Justice Chand Mal Ji Lodha and he could sense it and smilingly told Justice Lodha, let a small adjournment be given to Mr. Mathur. In case rule is amended, we are there to take care of it. Infact Government was ready and amended the Rule post haste. On next date of hearing I appeared before the Court very hesitantly and placed the Gazette notification knowing fully well that it will create an explosive situation.

I was prepared for adverse reaction of Court, as well as strong reaction of Mr. Bhargava. Be as it may, there was no option with Mr. Bhargava to amend the petition and challenge the validity of the Rule. The predicament of the Court was that they cannot ignore the Rule.

After this incident when we met at some social gathering Justice Jain Saheb put his hand around my neck and smilingly said, you are a mischievous man. You have put an old man in dilemma and annoyed him.

I was touched by his affection shown outside the Court. I remember one more occasion which needs to be mentioned.

A contempt notice was issued to the Chairman of the Road Transport Corporation for non-compliance of Court Order in a transport matter. Late Shri Raj Narain Ji, the Senior Government Advocate was appearing on his behalf and I was appearing for the State. Justice Jain Saheb was so upset by the adamant attitude of Chairman that he lost his temper and gave a dress down to Shri Raj Narain Ji and Chairman who was present in the Court. He imposed sentence of fine against the Chairman.

I can quote number of such instances from my memory, of my interaction with him. I can say from my personal experience that though he was very strong in his convictions and very blunt in expression, but he always treated me affectionately and politely.

This centenary memorial brought by his worthy son Justice N.K.Jain, former Chief Justice of Karnataka High Court will perpetuate his memory in legal history of Rajasthan. This will be an inspiration for young upcoming lawyers that how a person belonging to a small place can reach to high place by dint of his hard work and dedication. This is the beauty of his profession.

It is a popular saying in legal fraternity that there is always room on the top. That room on the top can only be achieved by hard work and dedication from a humble background. I wish success to my dear brother Nagendra in his mission to bring out his centenary volume in memory of Late Shri Justice J.P. Jain.

Justice Ashok Kumar Mathur

Justice G.S. Singhvi
Former Judge Supreme Court of India

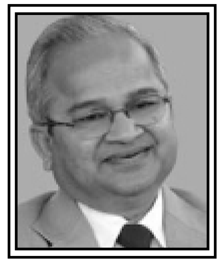

1. I am extremely happy to learn that Shri Justice N.K. Jain (former Chief Justice of Madras and Karnataka High Court, former President Himachal Pradesh Human Rights Commission and Lokayukata, former Chairman, Rajasthan Human Rights Commission and President, Geeta Bajaj Bal Mandir Sansthan , Jaipur) has decided to publish biography of his father late Shri Justice Jagdish Prasad Jain, whom the members of bar knew as Justice J.P.Jain.

2. After receiving the the degree of law, I Joined the legal profession in July, 1971. In next four years, I had the privilege to appear before him in several cases. In retrospect I can say, without any hesitation or contradiction, that Justice J.P. Jain was an outstanding Judge of his time, who always believed in doing Justice to the parties in accordance with law tempered with humanism and his own conscience. He was a man without any parallel during that time, absolutely fearless and totally devoted to his work. The judgments delivered by Justice Jain are ample testimony of his brilliance in various branches of law i.e, civil, criminal and constitutional and evidence of his qualities of head and heart.

3. When I was less than two years old in the profession, I got an opportunity to argue a second appeal before

Justice Jain on behalf of a tenant who was doctor by profession. Shri P.C. Bhandari, Senior Advocate was opposing me on behalf of the landlord. After hearing the succeeded in making out a case but expressed that at the end of the day the landlord cannot deny the right use of property according to his choice. However, with a view to compensate my client, Justice Jain granted almost four years time to him to vacate the premises despite stiff opposition by Shri P.C. Bhandari. After the case was over, most of the senior advocates who were present in the court congratulated me and said that this unusual order could have been passed only by Justice Jain.

4. Another incident which is a reminder of independence and fearlessness of Justice Jain and which I vividly remember relates to a senior advocate who was practicing on criminal side. The lawyer, though brilliant in his own field was quite arrogant and always tried to browbeat the Judges. On one particular day, his eight cases were listed in the court of Justice Jain in which applications had been field for grant of bail. After hearing the counsel in the first case, Justice Jain dictated the order rejecting the bail application. The lawyer got annoyed and told the court that all his petitions might be dismissed. Unruffled by the usual tactics of the advocate, Justice Jain compelled the learned counsel to argue the case and dismissed all the applications by recording reasons. In the modern days, it is very difficult to find Judges like Justice Shri J.P.Jain.

Justice G.S. Singhvi

Justice N.L. Tibrewal

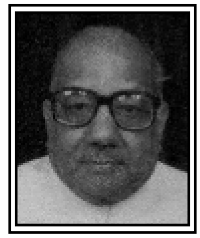

Former Act. Chief Justice
& Governor of Rajasthan

As per an English writer "In life we shall find some men that are great and some men that are good, but, very few men are both great and good". Shri J.P. Jain was amongst very few men, as he was both great and good. A self made man who by dint of his hard work, honesty and good behaviour soon earned name and fame as a lawyer and later on as a Judge.

After passing L.L. B. he started legal practice in Rajgarh, a small town in the erstwhile Alwar State, but, soon shifted to practice in High Court at Alwar. Alwar was an independent State at that time and was having its own High Court. After independence of India, Rajasthan was formed in 1949 on re-organisation of several princely States which included two main States of Jaipur and Jodhpur. On formation of Rajasthan, Jaipur was made capital of the State with a Bench of High Court while main seat was established at Jodhpur. Shri Jain then shifted at Jaipur in 1949 for practice in Rajasthan High Court, Bench at Jaipur. Shri Jain basically was a civil lawyer, but, after Constitution of India came in force on 26th January, 1950 he focussed more towards Constitutional practice. Very few lawyers knew about this remedy at that time.

In 1954, two students of Law college, namely, Shri O.P. Sharma and Shri Mahendra Singh Bedi, were detained from appearing in final examination by the then Principal, Dr. K.S. Hazela on the ground that examination form filled in by them did not have the signature of their father. The examination was scheduled to start after 2-3 days. Shri Jain was approached to take up the case of the students for which he agreed.

Writ petition was prepared till late night and the same was filed in the High Court next morning. As an urgent matter it was heard by a Division Bench of the High Court. Shri C.L. Agarwal, an eminent lawyer, was opposing the Writ petition. However, Shri Jain convinced the Judges that it would cause injustice to the students if they were not permitted to appear in the examination. The argument of Shri Jain was that in a case where father of a student had died,

how his signature could be obtained on the form appealed to the Judges. Ultimately, the Writ petition was allowed and the students appeared in the examination. This success made Shri Jain very popular as wide publicity was given in the news papers.

I shifted to Jodhpur in July 1965 to practice in unified High Court, as Bench of Jaipur was abolished in 1958 or so. I came in contact with Shri Jain at Jodhpur who was a senior lawyer and shining star of the galaxy of lawyers at that time. In my first meeting with Shri Jain, I was amazed by his towering and appeasing personality. He was always generous and helpful to young lawyers. His ever smiling face was a great attraction to all.

Shri Jain was elected President of Rajasthan High Court Bar Association. During his tenure as President of the Bar Association, he was instrumental in getting telephone connection at the residence of the lawyers who shifted from Jaipur etc. and also in getting allotment of residential plots for them from the UIT, Jodhpur. He also managed publication and distribution of latest judgments of the Rajasthan High Court after getting them cyclostyled for updating the lawyers with the latest judgments. This act highly benefitted the lawyers and was appreciated by all.

Before elevation to the Bench, Shri Jain filed and contested Writ petition on behalf of Dr. Sudrania, who happens to be a distant relative of mine. Dr. K.H. Hearajani was appointed as lecturer in Paediatrics in S.P. Medical College, Bikaner without considering the name of Dr. Sudrania, though it was purely on temporary and adhoc basis as a stop-gap arrangement for a few months. The Writ petition was hotly contested by the State Government as well as by Dr. K.H. Hearajani. One of the points involved in the petition was whether principle of equality applied in such matters. Ultimately, the Writ petition was allowed and appointment of Dr. K.H. Hearajani was held invalid. After a few months of this judgment Shri Jain was elevated to the Bench.

As a Judge, Shri Jain was highly respected and admired by the members of the Bar for his impartiality and courteous behaviour. As a Judge he always encouraged young budding lawyers. Unfortunately, Justice Jain died at a young age on 17th September, 1975 while he was a Judge. His period as a Judge was only for 5 years, but, lawyers who had occasion to appear in his court still remember him as a sober and wise Judge.

Justice N.L. Tibrewal

Justice S. N. Bhargava
Former Chief Justice, Sikkim High Court,
Former Chairman, Human Rights Commission
Assam, Manipur
Chancellor, IIS University

Respected Justice J.P. Jain was known to me for a long time when I was practicing as an advocate with my respected father Pt. Mukut Bihari Lal Bhargava who was also a freedom fighter and a member of the Constituent Assembly, Provisional Parliament and was 3 times elected as member of Lok Sabha. I had occasion to visit Alwar with my respected father and had privilege of staying with Justice J.P. Jain. He and his wife were very hospitable & courteous. I have seen Justice J. P. Jain as an advocate in the High Court at Jaipur and at Jodhpur as well.

He had also gone to Jail during High Court, Jaipur Bench agitation. He was a man of conviction and was always helpful to the bar and always took part in social service.

As a Judge, he was very courteous to both his juniors and seniors. He was very popular amongst his brother Judges also. He always believed that hard work, dedication, devotion and determination are the key to success in any field. He believed in simple living and high thinking and inherited human values. He was a thorough gentleman and always courteous to his colleagues and all the clients.

He was also President of Rajasthan High Court Bar Association. He also managed to publish cyclostyled copy of daily judgment of the High Court which proved very useful to the members of the Bar. This was highly appreciated by one and all.

When High Court bench at Jaipur was abolished and unified High Court was established at Jodhpur, he shifted to Jodhpur. I and my father also shifted to Jodhpur. Our residence was very close to his house. Therefore, I had occasion to be very familiar with him and his family. His son Justice N. K. Jain also started practicing in the High court and we used to be very intimate with each other. Judgements of Mr. Jain speak about his calibre and intelligence. Unfortunately he died at a very early age in 1975. After his death his portrait was installed in the Courtroom at Jodhpur, where he used to preside.

Hope this book will be very useful to young Advocates and will encourage the young students to take up law as their profession.

Justice S. N. Bhargava

Justice Y. R. Meena
Former Chief Justice
High Court of Gujarat

I am happy, and feel honoured to say a few words as tribute to, Late Justice J. P. Jain on his 100th Year birthday.

I got my education at Alwar, while I was in Raj Rishi College, I was fortunate to hear a lot about the eminence and good advocacy of Shri J. P. Jain during forties and fifties who had shifted from Rajgarh Tehsil Court to Alwar.

Alwar Bar was very rich in traditions. Alwar's lawyers were very good in legal knowledge, Advocates were doing all type of work like civil, revenue, and criminal in those days. The notable advocates were shri Umadutt Ji, B. L. Mahawal, Kripa Dayal, Umrao Mal Ji, Jai Kishan, Inder Lal Ji Mittal, Chhotu Singh, Satish Sharma, Bhagat Sahib etc. On joining the Bar again, I was fortunate to hear a lot about the qualities, of Justice Jain viz hard work, simplicity, dedication and devotion while discharging his commitment toward his client. He was also well behaved with opposite party, and also to the Court. He was a kind hearted person and had a quality and courage to face any problem in difficult situation.

He had conducted number of habeas corpus petitions, and helped so many persons like Kunj Bihari Lal Modi and other persons including press people. At various occasions, late Hon'ble Justice J. P. Jain fought for social cause, and was always willing to serve the society. Students of Raj Rishi College always praised his way of teaching. His behavior was exemplary while serving as part time lecturer for years.

God had given me opportunity to work as a Judge with my friend Justice Nagendra Jain since 20 July 1990.

It is good that a worthy son of worthy father is doing this unique and remarkable work by bringing out the souvenir containing details of his good humane qualities. I hope it will be helpful to inspire the young generation. Sadar Naman

Justice Y. R. Meena

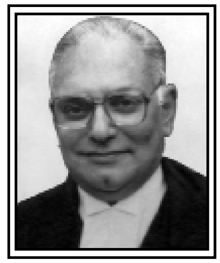

न्यायमूर्ति वी.एस.दवे
पूर्व न्यायाधीश
राजस्थान हाईकोर्ट

समय कितना तेजी से भागता है इसका अनुमान लगाना बड़ा मुश्किल है विशेषकर विशिष्ट जिन्दा दिल व्यक्ति का जो आपके सम्पर्क में आया हो तथा उसकी मृत्यु समय से पूर्व हो गई हो, आज 42 वर्ष के पश्चात भी भाई साहब श्री जे पी जैन की स्मृति ऐसी ताजा है जैसे कोई साल महीने पुरानी ही बात हो । राजस्थान उच्च न्यायालय की जयपुर खण्ड पीठ 1958 में बन्द कर दी गई थी। जोधपुर में एकीकृत उच्च न्यायालय बना। अतः अनेक सफलतम अधिवक्ता जयपुर से जोधपुर चले गये। उन्ही में से एक नाम था स्व. न्यायमूर्ति जगदीश प्रसाद जैन का । उन्होंने अपना कार्यालय जयपुर से जोधपुर स्थानान्तरित किया। बात 1959–60 के दौरान की है तब मैंने वकालत के क्षेत्र में अपना कदम रखा था । वरिष्ठ अधिवक्ता श्री चिरंजीलाल जी अग्रवाल, श्री राधाकृष्ण जी रस्तोगी, श्री चन्द्रभान जी भार्गव, श्री प्रेमनाथ दत्त इत्यादि तो उस समय 50 वर्ष पार कर चुके थे परन्तु बीच की पीढ़ी में कुछ अधिवक्ता थे जिनमें श्री जे पी जैन, श्री डी पी गुप्ता श्री हरि प्रसाद गुप्ता, श्री नरेन्द्र मोहन जी कासलीवाल, श्री सागरमल जी मेहता इत्यादि थे सभी 35 से 45 के बीच रहे होंगे, सब मेरे से बड़े थे, परन्तु इनके साथ खुल कर वार्ता हो सकती थी। खासतौर से उनसे जो बहुत ही खुशमिजाज थे तथा कनिष्ठ अधिवक्ताओं को साथ लेकर चलते थे, श्री जैन साहब उनमें से एक थे।

श्री जे पी जैन ने जहां तक मेरी स्मृति जाती है, वकालत राजगढ़, अलवर, जयपुर पीठ व फिर जोधपुर में की तथा कुछ ही समय पश्चात सफल अधिवक्ता के रूप में पहचाने जाने लगे । लम्बा कद, गौर वर्ण, धीर–गम्भीर परन्तु हंसमुख चेहरा विशिष्ट शैली में बनाये हुये बाल, सीधे चलने वाले, उनको दूर से आते हुए पहचाना जा सकता था ।

जोधपुर में उन्होंने पोलो ग्राउण्ड नं. 1 में अपना निवास एवं कार्यालय किराये पर लिया। पास में मैंने बंगला 109 एवं 110 ले रखे थे, 109 में मेरा कार्यालय एवं मेरे साथी स्व. पन्नालाल जी चौधरी रहते थे, 110 में मेरा निवास था । जैन साहब सुबह शाम दोनों दफा घूमने जाते तो मेरे से और मेरी पत्नी का हालचाल पूछे बिना नहीं रहते थे । उनके पास हर तरह के मुकदमे थे। तथ्यों और कानून दोनों पर उनकी अच्छी पकड़ थी। कभी किसी जज के सामने न मिमयाये न गिड़गिड़ाये । सीधी एवं शालीन भाषा में अपनी बात रखते थे निर्भीकता के साथ ।

12 अगस्त सन् 1970 के दिन उन्होंने राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद की शपथ ली। कुछ समय पश्चात जो आवास उनको मिला, वह भारतीय वायु सेना के प्रशिक्षण केन्द्र से लगा हुआ था तथा वहॉ आसपास कोई सिविलियन बस्ती नहीं थी, अतः पूर्व में कोई भी जज वहा जाकर रहना पसन्द नहीं करता था, परन्तु स्वयं जैन साहब ने उसे अपना निवास स्थान चुना । उस बंगले में जाने में उनको चार छ महीने का समय लगा होगा। इस बीच वे पोलो ग्राउण्ड में ही रहते रहे तब भी आवाज लगा कर हालचाल पूछे बगैर आगे नहीं बढ़ते थे। इसके अलावा छुटटी के दिन मेरे लॉन में अन्दर आकर मेरी पत्नी को जोर से आवाज लगाते ''कांती जरा चाय बना कर ला'' गलती से कोई पक्षकार उधर आ जाये तो ऑफिस की ओर इशारा कर उससे कहते ''जाओ या थोड़ी देर के बाद आना'' न्यायमूर्ति जैन साहब ने कभी भी कुर्सी को अपने सिर पर नहीं बैठने दिया तथा सारे अधिवक्ताओं से अपने संबंध यथावत रखे । घमण्ड उनके आसपास भी नहीं था ।

उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री नगेन्द्र जैन कालान्तर में राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने एवं स्थानान्तरण होकर मद्रास उच्च न्यायालय गये! वहॉ के मुख्य न्यायाधीश बने फिर कर्नाटक के मुख्य न्यायाधीश बने तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात हिमाचल प्रदेश व राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष रहे। श्री नगेन्द्र जैन की शादी में कार्य करने के लिये उन्होंने उच्च न्यायालय के कर्मचारियों का सहयोग नहीं लिया बल्कि कोई काम बताना होता तो न्यायमूर्ति कासलीवाल साहब को जो उस समय अधिवक्ता ही थे या श्री सागरमल जी को या फिर मुझे एवं श्री नाथू लाल पारीक को ही बताते थे। उनका मेरे पर विशेष अनुराग था।

भाई नगेन्द्र के बरातियों की लिस्ट में उन्होंने मेरा नाम उसके ससुराल में पूर्व में ही भेज दिया था । मैं किसी विशेष परिस्थितियों की वजह से आगरा बारात में नही जा पाया तो भी स्व. सौ. अरूणा धर्मपत्नी नगेन्द्र जैन की शादी में उसके पीहर से बांटा गया उपहार मेरे लिये लेकर आये जो आज भी मेरी अमूल्य निधि है और हमेशा उनकी याद दिलाता रहता है । शादी का आशीर्वाद समारोह जोधपुर में किया तो मेरी पत्नी से मीनू की राय मिलाने आ गये। गुजराती व्यंजन श्रीखण्ड, पूरी, कचौरी रखने का तय किया । उन्होंने समारोह का कार्यभार मुझे सौंपा । मेरे पिताजी के पास रहा हुआ एक चपरासी लक्ष्मीचन्द्र उनके पास लगा हुआ था जो पूर्व में हमारे यहॉ मेरे साथ कपड़े में श्रीखण्ड छनवाता था। उसने और मैंने मिल कर करीब 40 किलो दही को खादी के कपडे में छाना। कई दिन तक अंगुलियॉ आवाज लगाती रही परन्तु उसका आनन्द अलग ही था। उन्होंने जोधपुर में मकान बनाने हेतु जो प्लॉट खरीदा, वह मेरे बराबर वाला था। कालान्तर में भाई श्री नगेन्द्र ने उस पर मकान बनाया । मेरा तथा उसका परिवार ऐसे रहे जैसे एक ही हो ।

कोर्ट के अन्दर बैठ कर भी जैन साहब ने अधिवक्ताओं के साथ संबंध वैसे ही बनाये रखे, परन्तु कभी लिहाज नहीं बरता । दोस्ती निभाते थे, लेकिन कुर्सी की मर्यादा के साथ । जैन साहब नये अधिवक्ताओं के लिये एक अध्यापक से कम नहीं थे । अपनी कोर्ट को क्लास रूम के जैसे चलाते थे । उनकी कोर्ट में कभी गंभीर वातावरण देखने को नहीं मिला जिसको डांटना होता उसको भी प्यार से डांटते थे। हारने वाला भी कभी उनकी कोर्ट से असंतुष्ट होकर नहीं जाता था, क्योंकि वो विश्लेषण कर के अधिवक्ता को यह अहसास करा देते थे कि उसका मुकदमा चलने के काबिल नहीं है। श्री जैन साहब का 17 सितम्बर, 1975 को हृदय गति रूक जाने से अचानक स्वर्गवास हो गया। इस घटना से राजस्थान उच्च न्यायालय ने एक संवेदनशील न्यायाधीश खो दिया। विलक्षण प्रतिभा के धनी जैन साहब जीवित रहते तो श्री मोहनलाल जी जोशी से सीनियर होने के कारण मुख्य न्यायाधीश का पद भी सुशोभित कर सकते थे।

जैन साहब एक अच्छे खिलाड़ी भी थे। वे टेनिस खेलते थे। जैन साहब की मृत्यु उपरांत एक विचित्र घटना घटी। मृत्यु के 5 दिन पूर्व वह दिल्ली गये थे परन्तु दिल्ली जाने से पहले वह खुली अदालत में 4 मुकदमों के फैसले लिखा कर गये थे । अचानक मृत्यु हो से जाने से उन फैसलों पर उनके हस्ताक्षर नहीं हुये थे। अतः प्रश्न उठा उन मुकदमों को निर्णित माना जाये या नहीं। मामला खण्ड पीठ के सामने गया, जहां यह तय हुआ कि चूंकि निर्णय खुली अदालत में सुनाये जा चुके थे इसलिए इन प्रकरणों के फैसले मान्य होंगे तथा रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर से नकलें जारी हो सकेंगी।

बार कौंसिल ऑफ राजस्थान ने तथा अलवर बार एसोसिएशन ने श्री जैन साहब का एक चित्र लगाने का निर्णय लिया । जोधपुर में जिस न्यायालय कक्ष में वे अन्तिम बार बैठे, उसमें उनके चित्र का अनावरण तत्कालीन कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश श्री द्वारका प्रसाद जी गुप्ता ने तथा अलवर बार एसोसिएशन के हॉल में उनके चित्र का अनावरण उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन न्यायाधीश श्री ई एस वेंकटरमैया ने किया। अलवर का समारोह बहुत भव्य था, इसके साथ एक सेमीनार भी आयोजित किया गया था, जिसमें मैंने भाग लिया था मुझे अनावरण समारोह में भाग लेने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

भारत के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री लाहोटी साहब ने राजस्थान उच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ अधिवक्ता की स्मृति में आयोजित एक व्याख्यानमाला में कुछ पंक्तियां कही थीं, वह श्री जे पी जैन साहब पर पूर्णरूप से सार्थक होती हैं–

चल वो चाल के खुशी से कटे जिन्दगी तेरी।
कर वो काम के लोग तुझे याद करें।।
जहां भी तेरा जिक हो वह जिक–ए–खैर हो।
जब भी तेरा नाम लें अदब से लिया करें।।

न्यायमूर्ति जैन साहब को मेरा नमन् ।

न्यायमूर्ति वी.एस.दवे

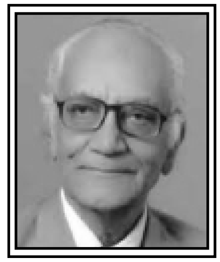

न्यायमूर्ति पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश
राजस्थान उच्च न्यायालय

न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन : ''जैसा मैंने उन्हें समझा''

न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन (श्री जे. पी. जैन) का जन्म 15 नवम्बर, 1917 को हुआ था और 17 सितम्बर, 1975 में उनका महाप्रयाण हुआ।

जीवन के प्रारम्भ से ही वे कर्मनिष्ठ रहे। ट्यूशन कर, अपनी शिक्षा पूरी की। वे एक कुशाग्र बुद्धि छात्र थे। उन्होंने 1935 में मैरिट से एलएल.बी. पास की। खेलों में उनकी प्रारम्भ से रूचि रही। कई पुरस्कार प्राप्त किये। टेनिस के अच्छे खिलाड़ी थे।

पारिवारिक वातावरण ने उन्हें धर्मनिष्ठ बनाया। विद्यार्थी जीवन की कर्मठता, खेल की भावना और विद्या के प्रति अनुराग ने उनके जीवन को संवारा और चरित्र का निर्माण किया। वे वकालत में सफलता व यश प्राप्त कर, बाद में एक कर्मनिष्ठ न्यायाधीश के रूप में भी स्थितप्रज्ञ बने रहे। जैन धर्म की एक प्रार्थना ''मेरी भावना'' की कुछ पंक्तियां उद्धृत करना चाहूंगा, जो उनके चरित्र को साकार करती हैं :–

''रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूं
बने जहां तक इस जीवन में औरों का उपकार करूं
या कोई कैसा भी भय या लालच लेने आवे
तो भी न्याय मार्ग से मेरा कभी न पथ डिगने पावे।

जस्टिस जैन ने न्याय जगत में प्रवेश कर इस बात को प्रमाणित कर दिया कि उनकी संवेदनशीलता समाज के उन लोगों के

प्रति थी जो व्यवस्था के कारण उत्पीड़ित थे। वे थे मुख्यतः विद्यार्थी, शिक्षक, डॉक्टर व सेवारत अधिकारीगण। हमारी सरकार का शासन चलाने वाला सरकारी तंत्र स्वयं रूल्स की उपेक्षा करता है और इस कारण छात्रों को प्रवेश नहीं मिलता था, डॉक्टर परीक्षा पास कर भी कार्य करने में असमर्थ रहता था, नौकरी से कब निकाल दिया जावे, इसकी तलवार सिर पर लटकी रहती थी। इस वर्ग के लिए जस्टिस जैन मसीहा बन कर आये।

उनका विचार था साहित्य को राजनीति से और सरस्वती को लक्ष्मी से दूर ही रखना चाहिए। इस प्रकार वकालत में तथा बाद में न्यायमूर्ति के रूप में किये गये संघर्ष की स्मृतियों से उनकी विचारधारा प्रभावित रहती थी। उनकी माताजी धार्मिक प्रवृत्ति की थी जो अपने परिवार की समर्पित भाव से सेवा करती रही। गृह लक्ष्मी होते हुए भी उनमें वीतरागता की झलक दिखाई देती थी। ''पर हित सरिस धर्म नहीं भाई'' तुलसी का कथन उनके मार्ग को प्रशस्त करता था। पिता श्री मोहन लाल जी स्टेशन मास्टर थे और सदैव समय के पाबंद रहे क्योंकि वे जानते थे किंचित सी चूक जान व माल की अपार क्षति कर सकती है।

वे कर्त्तव्यनिष्ठ तथा अपनी ड्यूटी के प्रति समर्पित थे और यही माता–पिता के चरित्र के गुण, उन्हें संस्कारों से मिले थे। वे वकालत के प्रोफेशन में अपने क्लाइंटस के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ काम करते थे। वे वास्तव में उन वकीलों के सदृश्य थे जो अपने क्लाइंट की पीड़ा को आत्मसात कर लेते हैं, यही कारण था उनके क्लाइंट उन्हें देव पुरूष मानते थे। जज के रूप में निर्भीक निर्णयों द्वारा उन्होंने सभी का मन जीत लिया था। जस्टिस जे.पी. जैन मेरे बड़े भ्राता श्री नाथूलाल जी जैन के अच्छे मित्रों में थे। दोनों ही उस जमाने में ट्रान्सपोर्ट की वकालत में यशस्वी वकील माने जाते थे। इसलिए मुझे व्यक्तिगत रूप से उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला।

उनका ध्येय वाक्य था – Plan your work; work your plan. उनका कथन था those who failed to organize, generally agonise यानि अव्यवस्थित सदा व्यथित रहता है।

उनकी मृत्यु पर जिस प्रकार लोगों के आने जाने का तांता रहा, उससे तो सही समझ में आता है ''मौत उसकी है, जिस पर जमाना रोये।''

सच यह है कि जज का निर्णय ही उसका संस्मरण है, अर्थात् उसकी लेखनी ही उसका संस्मरण है। किसी ने सच कहा है कि जज को अपने दर्द में अपने क्लाइंट के दर्द से आत्मसात कर लो, विजय सत्य की निश्चित है। जस्टिस जैन अपनी इसी अभिव्यक्ति से जाने जाते थे और भविष्य में भी यही उनकी यादगार को अमरत्व देगी।

जस्टिस जैन ने जीवन को जीया है, सार्थक किया है। उनके जीवन के कथानक को जानने के बाद निम्न पंक्तियों में जो उदगार कवि ने अभिव्यक्त किये हैं, वे जीवन्त हो उठते हैं '

करो कर्म ऐसा, मनुष्य जन्म लेकर,
कि जीवन महामृत्यु से जीत जावे;
खींचो चित्र ऐसा, समय के पटल पर,
कि तेरे जीत जाने पर जग गीत गावे।

राजस्थान के लोग इस कर्मयोगी को याद कर उनके यश के गीत गाते रहेंगे।

न्यायमूर्ति पानाचन्द जैन

लोग कहते हैं कि बदलता है, जमाना अक्सर।
पर मर्द तो वो है, जो जमाने को बदल डालते हैं।

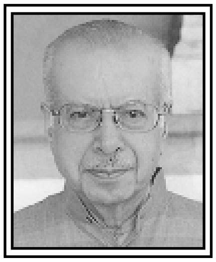

Justice I.S. Israni
Former Judge
Rajasthan High Court

I came to Jaipur in 1949, as a refugee from Sind. My father Shri Vasudevji, a leading lawyer Former Prime Minister of Sind and was President of the Association, Jaipur at that point of time.

I started practicing with my father since year 1950. The High Court Bench was at Sanganeri Gate till abolition, in the year 1958, and thereafter that building was used for a hospital.

Shri J. P. Jain Sahib also shifted from Alwar to Jaipur in 1949 almost at the same time. And in 1951 he was residing at 5, New Colony, Panch Batti, near our one relation Mr. Keshwani Ji and we were acquainted with him. I often used to meet J. P. Jain Sahib to discuss some cases and also matters pertaining to rehabilitation of the members of our society.

Shri J. P. Jain Sahib helped and cooperated with our people namely, Keshwani Sahib, TolaniJi, Motwani ji in sorting out the issues pertaining to sharnarthi's rehabilitation like Shri Daulat Mal Ji Bhandari. After abolition of Jaipur Bench, my father used to send cases to him in Jodhpur, till, he became Judge in August 1970.

During the period, I found him a charming and loving person. He was a well behaved person, with high integrity. He was not only an eminent lawyer, but also simple, hardworking, straight forward, bold, and a gentleman. He will always be remembered as an eminent lawyer, good Judge, and above all a humanist, for his services rendered to the legal fraternity and to the society as well.

I congratulate brother Justice Nagendra Jain for this noble gesture, and hope this publication on his centenary year will certainly inspire the young generation, to inculcate these good qualities of Justice J. P. Jain in their life.

I pray my respectful tribute to the departed soul.

Sadar Naman .

Justice I .S. Israni

Justice B. R. Arora
Former Judge
Rajasthan High Court

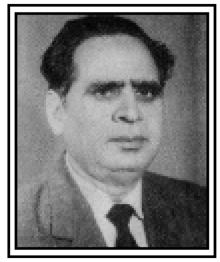

I feel honoured to say, that I came to Jodhpur for practicing in High Court in 1963, and joined office of Shri C. L. Agarwal, for some years. I had an opportunity to know Shri J. P. Jain, Advocate. I found that he had a roaring practice. He was like a shooting star in the legal profession attracting clients from all over Rajasthan.

The nature had blessed him with sharp legal acumen hard work and fairness with boldness, clarity in thoughts, good behavior and humane qualities. He commanded very good reputation in Bar and Bench.

He was helpful to new entrants and budding advocates. He had very cordial relations not only with advocates, like Pt. MBL Bhargava, C. L. Agarwal, R. K. Rastogi, S. K. Jindal, PC Bhandari, O. C. Chateerji, G.C. Kasliwal, H. P. Gupta and others, but also had cordial relations with advocates of Jodhpur viz Chand Mal Lodha, H. C. Jain, M. M. Singhvi, B. M. Singhvi, Sumer Chand Bandari, L. R. Mehta, M. C. Bhandari, Than Chand Mehta, H. M. Parakh . M. D. Purohit, G. M. Lodha and others.

I also had an opportunity to work with him as General Secretary of Rajasthan High Court Bar Association, Jaipur when he was President of the Bar Association. On his initiation, and untiring efforts to help others, we advocates got telephone connections at our residence with the help of the then Sanchar Mantri, Union Government, Shri Raj Bahadur of Bharatpur.

He was also instrumental in getting piece of land for advocates, for construction of their own houses, as he convinced Shri Tarak Prasad Vyas UIT Chairman with the help of Shri M. M. Singhvi, Advocate who was also a member of UIT, Jodhpur.

He was also instrumental to start publication of daily orders / judgments of the courts by getting them cyclostyled and after compiling, distributed copies of all the cases to the members of the Bar Association for updating their knowledge. These works were highly applauded by one and all.

Justice Mr. Jagat Narayan, the then Chief Justice persuaded Shri J. P. Jain to become Judge and he proved worthy of the confidence reposed by the then Chief Justice.

Justice J. P. Jain even in a short span of about 5 years, had acquired all the qualities of a Judge, i.e. to hear courteously to answer wisely, to consider soberly and to decide impartially as explained by philosopher 'Socrates'

I have learnt a lot from his way of working. I admired his good qualities, which were also helpful to me, while I discharged my duties of a High Court Judge between the period July 1990 to August 1997.

Justice B. R. Arora,

" Take up one idea. Make that one idea your life - think of it, dream of it, live on that idea. Let the brain, muscles, nerves, every part of your body be full of that idea, and just leave every other idea alone. This is the way of success."

Swami Vivekananda

"Live as if you were to die tomorrow.

Learn as if you were to live forever."

Mahatma Gandhi

न्यायमूर्ति राजेन्द्र सक्सेना
पूर्व न्यायाधीश
राजस्थान उच्च न्यायालय

संस्मरण

यह परमहर्ष का विषय है कि न्यायमूर्ति श्री जे.पी. जैन साहब की स्मृति में शताब्दी वर्ष पर उनकी यादों को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। मेरे लिये यह परम सौभाग्य का एवं सुखद अवसर है कि मुझे श्री जे.पी. जैन साहब के प्रति अपने उद्‌गार प्रकट करने का मौका प्राप्त हुआ। मैं भी अपने श्रद्धा सुमन इस संस्मरण के माध्यम से प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जब मैं लॉ कॉलेज में फाइनल ईयर का छात्र था एवं लॉ की क्लासेज महाराजा कॉलेज के भवन में लगती थी, उन दिनों लॉ कालेज के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा हुआ करते थे। हमारे कॉलेज के प्रिंसीपल श्री.के.एस. हजेला थे, जो राजस्थान सरकार के प्रथम महाधिवक्ता भी थे। उन्होंने श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा व अन्य 8 छात्रों को कॉलेज में उपस्थिति कम होने के कारण एवं अनुशासनात्मक कार्यवाही विचाराधीन बताकर अचानक नोटिस बोर्ड पर नोटिस चस्पा कर दिया कि उन्हें वर्ष 1954–55 में होने वाली परीक्षाओं में नहीं बैठने दिया जायेगा। परीक्षा में हफ्ते भर का समय ही शेष रह गया था एवं छात्रों का साल खराब होने का अंदेशा था।

इस संबंध में कई वकीलों से राय ली गई परन्तु केस कमजोर होने के कारण एवं अनुशासनहीनता का मामला होने के कारण किसी भी वकील ने यह केस लड़ने में रूचि नहीं दिखाई। उस समय श्री जे.पी. जैन साहब अलवर से जयपुर आकर वकालत कर रहे थे। श्रीमान् जैन साहब की तार्किक शक्ति, ईमानदारी से काम करने की छवि उनके अलवर से जयपुर आने से पहले ही पहुॅच चुकी थी। फलस्वरूप पीड़ितों ने उनसे सम्पर्क किया। इस पर श्री जे.पी. जैन साहब ने राय देकर रिट याचिका दायर करवाई और निःशुल्क पैरवी करने का आश्वासन दिया।

उक्त रिट याचिका का विरोध कॉलेज के प्रिंसीपल श्री के.एस. हजेला एवं यूनिवर्सिटी के वकील श्री चिरंजीलाल जी ने किया और तर्क दिया कि रिट याचिका नहीं चल सकती क्योंकि विश्वविद्यालय स्वायत्तशासी (Autonomus) संस्था है। बहस तीन दिन तक चली। इन दिनों हम सभी छात्र उनके ऑफिस में बैठकर श्री जैन साहब के दिशा अनुसार लॉ जर्नल्स में से कई तरह की कानूनी दलीलें निकालकर प्रस्तुत करते थे। इस दौरान श्री जे.पी. जैन साहब ने स्वयं के साथ–साथ हम सभी छात्रों से भी काफी मेहनत कराई, जो हमें आगे जाकर वकालत में भी मददगार रही।

अन्त में न्यायालय ने घोर विरोध के बावजूद जैन साहब के तर्कों को स्वीकार किया। रिट याचिका मंजूर हुई। उल्लेखनीय है कि उक्त 10 छात्रों में से 6 प्रथम श्रेणी तथा 4 छात्र द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। इस केस से श्री जे.पी. जैन साहब की प्रसिद्धि में चार चांद लग गए।

मन को छू लेने वाली दूसरी घटना 1958 की है, जब जयपुर खण्ड पीठ को समाप्त कर जोधपुर में ही हाईकोर्ट द्वारा सुनवाई करने के नोटिफिकेशन पर समस्त प्रदेश के वकीलों का आन्दोलन चला। पहले दिन श्री वेद पाल त्यागी जी व दूसरे दिन श्री जे.पी. जैन साहब की अगुवाई में वकील जेल गये, उनमें मैं भी शामिल था। आगे जाकर हममें से कई अच्छे और नामी वकील बने एवं मैं हाईकोर्ट का जज बना। जेल में श्री जैन साहब की प्रतिभा को मुझे और भी नजदीक से देखने का मौका मिला। उनके साथ रहने से ऐसा नहीं लगा कि हम जेल में हैं। वे एक बहुत ही मिलनसार, मृदुभाषी, अपना काम अपने आप करने वाले, अनजान के प्रति संवेदनशील, निर्भीक एवं कर्तव्यनिष्ठ विभूति थे। उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। माफी नहीं मागने के कारण 18 दिन की सजा हुई।

उनके साथ न्यायालय एवं जेल में बिताया गया समय मेरे स्मृति पटल पर आज भी वैसा ही अंकित है, जैसा उस समय देखा एवं महसूस किया था। उनको शत् शत् नमन् ।

न्यायमूर्ति राजेन्द्र सक्सैना

Reference at Chief Justice's Court No. 1 by Additional Advocate General of Rajasthan, Jodhpur dated 19.9.1975

My Lord the Chief Justice and Lordships,

We have gathered here today on a very solemn occasion to grieve at the sudden demise of Justice J. P. Jain. My Lords, though it is my very painful duty to speak, but I believe that there is no grief which does not speak.

Justice J. P. Jain had died working. He denied himself any rest which could have made it possible for him to earn his well deserved retirement in due course. He knew he was afflicted by a weak heart, but that did not deter him from work. I believe he was not afraid of death like some people who are so afraid to die that they never begin to live. Justice J. P. Jain had an abiding faith in honesty, truth and righteousness and had dreamt of a budding nation free from un-truth, deceit and devious ways.

As an officer of this Hon'ble Court, I found him a courageous person. His courage was cool and calm My lords, as an individual I found him a really great and generous person. I had appeared before him in several hundred cases and I found that he had a deep understanding of the socio economic problems and he applied his understanding in the matters before him without impairing the rule of law. My Lords, Justice J. P. Jain was full of life and he lived every fibre of it.

My Lords, the Bar is greatly shocked and grieved at the loss of Justice J. P. Jain. On behalf of the Bar, I pay my humble homage to late Justice J. P. Jain. May his soul rest in peace.

Courtesy – High Court

Reference at Chief Justice's Court No. 1 by Vice Chairman, Bar Council of Rajasthan, Jodhpur dated 19.9.1975

My Lords Hon'ble Chief Justice, My Lords and my brother Advocates.

I associate myself wholeheartedly with My Lord Chief Justice in expressing profound grief on behalf of my self and on behalf of The Bar Council of Rajashan on the sad, sudden and pre-mature demise of Hon'ble Justice J. P. Jain

Hon'ble Justice Jain's distinguished university career his large and varied practice were all elements which held out the promise when he was appointed to the Bench of a successful Judicial career.

As a Judge, he had got the high judicial qualities, and independence of character and profound learning which he had at all times, displayed throughout his career. His shifting of the facts was marvellous and interpretation of law was superb.

Various cases of this High Court, the Judgements of which were delivered by him are the brilliant examples of the same. His opinions on a number of complicated legal questions which lie embedded in the reports bear the stamp, if I may be permitted to say so, of a rare combination of subtle and penetrating intellect with a far reaching breath of view. These great attributes were carried within by a personality ever so gentle and humble in mind.

His endeavors were untiring and he was no respecter of only personages. Hon'ble Justice Jain's life was fully marked by truthfulness of character and devotion to his duty. He would always be remembered for his boldness and courage.

My heart goes out in most sincere condolences for the departed soul of Justice J. P. Jain and I convey on behalf of the members of the Bar Council and the fraternity to the lawyers our deepest condolence to his bereaved family. I pray to Almighty God that his soul may rest in eternal peace.

Courtesy – High Court

Reference at Chief Justice's Court No. 1 by President, Rajasthan High Court Bar Association, Jaipur dated 19.9.1975

Mr Lord the Chief Justice Hon'ble Judges, and Friends

We are meeting here today under the shadow of great calamity. The cruel hands of fate have snatched Mr. Justice J. P. Jain from us. His noble qualities of head and heart have already been described by my lord the Chief Justice and my learned friends and I associate myself fully with them in the feelings and sentiments expressed by them.

In the sad and premature death of Mr. Justice J. P. Jain, we have lost not only a very good and capable Judge, but also a fine gentleman. He has left a void which would be very difficult to fill.

I on my own behalf and on behalf of the members of the Bar Assoication, pray to the Almighty to grant eternal rest and peace to this departed soul and give strength and fortitude to the members of his family to bear this terrible and irreparable loss.

We all convey our heartfelt condolence to the bereaved family.

Courtesy – High Court

There is no easy walk to freedom anywhere, and many of us will have to pass through the valley of the shadow of death again and again before we reach the mountaintop of our desires.

Nelson Mandela

It often requires more courage to dare to do right than to fear to do wrong.

Abraham Lincoln

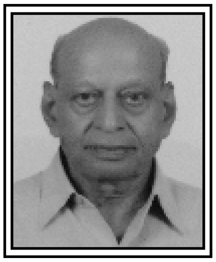

Sagarmal Mehta

Sr. Advocate

I am happy to write a few words about Late Justice Shri J.P.Jain on the occasion of his 100^{th} birth centenary.

I had the good fortune of knowing him since 1950, when I started the practice in the High Court Jaipur Bench. He was jolly by nature and used to mix-up with the advocates freely. His arguments were impressive and to the point. By dint of his hard labour and sharp intellect, he soon rose to the heights in the profession. He was kind and considerate to his clients. He argued the cases of students and downtrodden people without charging any fees.

Due to the abolition of Jaipur Bench in the year-1957, the lawyers and the public of Jaipur were immensely agitated. The lawyers boycotted the courts for a number of months. Some of the citizens sat on hunger strike and the lawyers and the public protested the abolition of Bench. The first day of agitation was led by Shri V.P.Tyagi, Advocate as he then, was along with 10 advocates. On the next day of the agitation, Shri J.P.Jain led the march and I was also one of the members along with Shri Jain on the protest march. Shri Jain and other advocates were sentenced to 18 day's jail imprisonment. All other advocates in turn led the protest march and they were also sentenced and sent to imprisonment.

Thus, Shri Jain took an active part in the establishment ofJaipur Bench, However, unfortunately the Bench was restored in the year-1977 when the then Prime Minister Smt. Indira Gandhi realized the need of Jaipur Bench. Shri Jain was reckoned as the successful lawyer from the year-1958 to 1970 and by that time he had lucrative practice and was counted amongst the leading advocates.

He was elevated to the Bench on 12.8.1970 and he served for the Bench till 17.9.1975, when he met with a cardiac arrest and the cruel hands of nature snatched him from us. During this short tenure as the Judge he established himself as a knowledgeable judge, he maintained high honour and dignity among clients and advocates in the court. He conducted the proceedings in the court in a dignified manner. He always encouraged the junior counsels and the lawyers also paid him reverence.

Besides the legal profession, he also participated in social, religious and philanthropic activities. He was elected as President of Alwar Jain Temple, Jodhpur Jain Temple and also member of Shri Mahavir Digambar Jain Atishaya Kshetra Management Committee from 3.2.1958 to 17.9.1975. He was also interested in sports and he was a player of Tennis and Hockey. He was a lover of nature and fond of pet dogs.

His son Justice Mr. N.K. Jain also inherited the qualities of head and heart from his father and he was also elevated to the Rajasthan High Court and thereafter, remained as Chief Justice of the Madras and Karnataka High Court. He also served as a Lokayukta & the Chairman of the Human Rights Commission in Himachal Pradesh and Rajasthan.

In the untimely death of Shri J.P. Jain, we have lost the legal luminary. On the occasion of his 100th birth centenary, I pay my respectable homage to him.

Sagarmal Mehta

> Man needs his difficulties because
> they are necessary to enjoy success.
>
> **A.P.J. Abdul Kalam**

N. M. Ranka
Senior Advocate
Rajasthan High Court, Jaipur

MY REMEMBRANCES

Justice J. P. Jain had a multifaceted and charming personality, robust health. He was a stirck vegetarian, following Jain principles, philosophy and tenets.

After abolition of High Court Bench Jaipur during 1958 – 1970 he had to shift to Jodhpur High Court where he used to have large appearance with remarkable success. However, he maintained" ethics and standard of high conduct and etiquettes", which brought him name and fame, not money, as he had no passion for minting money, but to do his duty with devotion, dedication and determination. He was highly respectable legal legendary of Rajasthan.

He used to take ample interest in the welfare of members of legal profession. While serving in different capacities, he got the land allotted to advocates and telephone to the bar members at Jodhpur.

Shri Bhagwan Das Ghiya and Shri Bhanwar Lal Ranka (my cousin) in earlier years and myself from 1956 came in close contact with respected Justice J. P. Jain, we had utter faith in his competency, capacity, art of influencing Honorable Judges with true facts, convincing arguments technique and matching judicial precedents. He had in depth knowledge and study of civil, criminal, revenue, service, corporate, tax and other allied laws. We felt safe in his hands.

He was elevated as honourable judge of prestigious Rajasthan High Court on 12.08.1970 on account of knowledge,

integrity, virtues and human values and dynamic personality, and continued till his demise on 17.09.1975. During his tenure, he delivered many landmarks and bold judgments, without any fear or favour. His mode & method of dispensation of justice was remarkable and he treated the Honourable High Court as “Temple of Doing Justice”. Unfortunately we lost a precious person, a torch bearer, too early. It has been a big irreparable loss to the society, the family and to me in person. His portrait was unveiled in the Rajasthan High Court, by the then Chief Justice D. P. Gupta in his eternal memory.

I am happy and delighted to learn, honourable Mr. Chief Justice N. K. Jain, an equally competent son of a competent father, is publishing Book in this year of his birthday centerary which would inspire, encourage, motivate and make true law professionals, to 'Serve the Society' and 'Build the Nation'.

My Greetings & Best Wishes.

N. M. Ranka

Learn from yesterday, live for today, hope for tomorrow.

The important thing is not to stop questioning.

Albert Einstein

Develop success from failures. Discouragement and failure are two of the surest stepping stones to success.

Dale Carnegie.

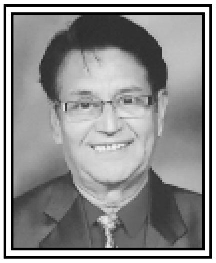

J K Singhi
Sr. Advocate Jaipur

I felt proud and pleasure both when Nagendra Bhai Sab asked me to share my happy moments with uncle as he was bringing out a Book in his birth centenary year 2017.

I had seen him practicing as an advocate and a judge as well. He was quite affectionate and cordial with budding lawyers and used to give points. He used to walk as a lion full of confidence and vigour.

I may recall a few incidents of Uncle, when he was an advocate and as Judge, observed by me while sitting in the court.

The matter was of the nationalization scheme of bus route. Shri J. P. Jain Sahib was arguing the matter. In the mids of the arguments, every time Additional Advocate General interrupted. On that Jain Sahib used to close the file and sit down on the chair. And as soon as he started argument again he interrupted, on that Shri Jain Sahib, requested the court, Sir, can't the Learned Additional Advocate General, wait for his own chance? Specially Shri Naren De, the former Attorney General of India, is in the court and is not speaking any word. In these circumstance how can I argue?

Another incident pertains to his judgeship period, while he was sitting, as a vacation Judge. Single Judge of a vacation court has power of a division bench during vacations. The matter pertained to Challenge of vires of land building tax, arguing counsel were Shri C. L. Agarwal and Shri H. M. Parakh and the then the Learned Advocate General Dr. L. M. Singhvi was for the State.

Hot arguments were going on and a query was made by Justice Jain. Then Advocate General said we will amend the Act,

Justice Jain was of the view, that Government has always power to amend the law, but once the matter is sub-judiced and the arguments are going on, such amendments will not be proper. However, the court observed, you will do your work and the court will see it at appropriate time.

A tax matter was listed on permission before D. B., of Hon'ble Justice Chhangani & J.P. Jain Sahib Court, after lunch the then former Attorney General Shri C. K. Daftari, was arguing the matter. After some argument Justice Jain asked Mr. Daftari is it not a matter to be first filed before the Tribunal, then to approach us. Daftari Sahib had no answer and the matter was withdrawn to avail statutory remedy under the Act. Justice J. P. Jain Sahib was not over awed by stature of appearing advocate.

Justice Jain had great humor in court and used to keep proceeding light. Once he told Kakaji late P C Bhandari Sahib that he is not going to become "THAT" when Kakaji was arguing for admission of a case in his court because Kakaji used to say in corridors that I made judge "THAT" after getting the case admitted and stay order.

Once while sitting in his court I gave some remarks on arguments of a lawyer and that was heard by uncle. He cautioned me never to do it in any other court else I will be in difficulties. These are the great qualities of uncle.

His life is a guiding path for young lawyers. He used to argue with vigour boldness and to the point. He did not cow down while doing arguments either as a lawyer or as a judge.

I pay my profound regards and sincere affectionate tributes to the everlasting memory of the Great Uncle Justice J P Jain Sahib.

-J K Singhi

अभय कुमार भंडारी

वरिष्ठ अधिवक्ता

राजस्थान हाई कोर्ट

मेरा प्रथम परिचय माननीय जस्टिस श्री जे.पी. जैन के साथ सन् 1968 में हुआ जब मैंने वकालात शुरू की थी। उस वक्त वे राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर में वरिष्ठ अधिवक्ता थे और सर्विस, ट्रांसपोर्ट, संविधान व दीवानी कानून के जाने–माने वकील थे।

मैं उनके विशाल व्यक्तित्व से काफी प्रभावित था, उनका रोबीला चेहरा, उनकी पर्सनलिटी को प्रभावित करता था। वे अति अच्छे लिबास धारण किया करते थे जो उनके व्यक्तित्व में चार चॉद लगा देते थे। वे स्वभाव से काफी मस्त, मौजी व संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे। वे सभी नये और छोटे–बड़े वकीलों से अच्छा व्यवहार व संबंध रखने वाले व्यक्तियों में से एक थे।

मुझे ध्यान आता है कि वे अलवर से जयपुर हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करने आए। उस वक्त उनके और मेरे पिताजी के संबंध जयपुर में बहुत अच्छे रहे। मेरे चाचा श्री प्रेम चन्द भण्डारी, श्री हरि प्रसाद गुप्ता व उनकी अच्छी पटती थी। उन्हें तिकड़ी के रूप में जाना जाता था, परन्तु मेरे पिता जब राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश रहे उस वक्त किसी वजह से श्री जे.पी. जैन साहब उनसे नाराज चल रहे थे।

इसके बावजूद मुझ पर उनका पूरा स्नेह बना रहा। व्यवहार में कोई कमी नहीं रखी। मेरे पिता भी श्री नगेन्द्र की शादी के आशीर्वाद समारोह में परिवार सहित सम्मिलित हुये थे। आपसी गिले–शिकवे समाप्त हुए। इसके पश्चात उन दोनों में काफी प्रेम भाव के संबंध रहे।

सन् 1970 में जे.पी. जैन साहब, राजस्थान हाईकोर्ट में न्यायाधीश नियुक्त हुए। सभी वकीलों से अच्छी तरह परिचित थे। केस में टू दी पाईन्ट बहस सुनने के साथ–साथ यंगस्टर्स को प्रोत्साहन देते थे।

मृदुभाषी, स्टेट फारवर्ड, निर्भीक व मस्त स्वभाव होने के कारण उन्हें न्यायाधीश के रूप में बहुत सफलता मिली। सबने बहुत सराहना की। अपने अल्प कार्यकाल में वे बहुत अच्छे न्यायाधीश साबित हुए।

मुझे उन्होंने अपार स्नेह दिया और समय–समय पर मुझे प्रेरणा देते रहे जिसका मुझे अपने वकालत के पेशे में बहुत लाभ मिला। मेरी ओर से उनको हार्दिक श्रद्धांजलि।

अभय कुमार भंडारी

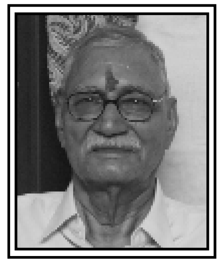

Mohanl Lal Panwar

Advocate, Rajasthan Hight Court Jodhpur

I was well known to Late Shri J. P. Jain Sahib, when I was working with late Shri Chandmal Lodha (former Judge,) as his junior from 1964 to his elevation to the High Court Judgeship at Jodhpur on 12.11.1967.

Since then I came in contact with Late Shri J. P. Jain Sahib. Both were very good and intimate friends. They respected each other. Justice Jain Sahib had a great grand gala personality. He was well known as a leading advocate in service and transport matters in High Court.

Every member of the bar at Jodhpur, in those days, was fully aware about the brilliance, independence and fearlessness of Shri J. P. Jain Sahib as an advocate and also a Judge of the High Court since 12.8.1970. So many incidents could be narrated. But, his contemporary friends, advocates and brother Judges are not alive to narrate them. However, I may recall two such incidents, while sitting in the Court.

First in a company matter, which was for appointment of a provisional liquidator, the matter was in progress, before Hon'ble Justice P. N. Singhal, Shri Ved Vyas, one of the top company lawyer of the country and Shri K. K. Jain, Senior advocate from Delhi appeared for the company and sought adjournment. The Court granted it On that day Jain Sahib advocate for the creditors, vehemently opposed and made a very bold statement fearlessly in the court, “Sir, it is not proper, as on earlier 2-3 occasions also they sought time on the same ground. My clients suffer substantial loss for this reason. With great respect, this Hon'ble Court without apprehending the real facts had granted adjournment. It is not fair and proper.”

I remember one more incident, which I think is very much interesting.

In a Civil Writ petition entitled DCM Kota vs Electricity Board, Kota, two well known Senior advocates of India Shri M.C. Chhagla and Shri C.K. Daftari came as counsels in opposition to each other.

In High Court gallery they were talking that this new Judge has become vacation Judge, so we will get the favourable order. The matter was argued before Justice J. P. Jain. And after hearing the matter, the Justice J.P. Jain decided it then and there.

Both the senior advocates were astonished that a newly elevated Judge could decide it instantly. This showed the confidence, efficiency, clarity and legal knowledge of late Justice J. P. Jain. He was the source of inspiration for many people of that time and still continues to be so.

Mohan Lal Panwar

Success Mantra

The only power you have on this planet is

the power of decisions.

be judicious & timely...

Don't say

" There is sill time "

or

" May be next time "

Because there is also a phrase -

" It is to late "

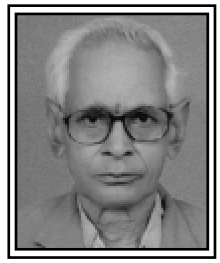

प्रकाशचन्द जैन
एडवोकेट
राजस्थान उच्च न्यायालय, अलवर

मैं राजऋषि कॉलेज अलवर में पढ़ा, वकालत अलवर में ही शुरू की। लॉ कॉलेज में विधि का अध्यापन किया। आदरणीय जैन साहब अलवर से जयपुर जा चुके थे। दोनों ही जगह उनकी ख्याति अच्छे, खुशमिजाज, समर्पित भाव से काम करने वाले, मेहनती, निर्भीक व संतोषी वकील के रूप में थी।

अलवर के समकालीन वकीलों में उनकी हिम्मत, व्यवहार समभाव व न्याय प्रियता की मिसालों पर कई बार चर्चा होती रहती थी।

श्री जैन मित्र मण्डल संस्था, अलवर 1940 में पंजीकृत की गई थी। श्री खिल्लीमल जैन, एडवोकेट के पिता संस्था के कभी अध्यक्ष हुआ करते थे। चर्चा में उन्होंने बताया कि एक साहब ने संस्था के बारे में गलत टिप्पणी कर अनियमितता की बात कही। इस पर तत्कालीन मानद् मंत्री आदरणीय जे. पी. जैन साहब ने बतौर मंत्री उन्हें नोटिस दिया, कि वे अपने कथन को साबित करें। जनाब ने सदस्यों के सामने अपने कथन पर अफसोस जाहिर किया व सबके सामने माफी मांगी।

जयकिशन क्लब के सदस्यों ने जब अपने महीने का चंदा कई तकाजों के बाद भी नहीं दिया, तो उनकी सदस्यता समाप्त करने का नोटिस दिये जाने की चर्चा की गई। किसी ने कहा कि माननीय चीफ जस्टिस साहब, जो अंग्रेज थे, का भी समय पर चंदा नहीं आया है वह बाकी है, इस कारण दिक्कत रहेगी। इस पर तत्कालीन अध्यक्ष श्री जे. पी.जैन साहब ने सहज भाव से कहा कि अगर तकाजों के बाद भी अपने ड्यू समय पर जमा नहीं कराये तो सभी डिफाल्टर्स को नोटिस जाऐंगे। तब माननीय जज साहब को किसी ने इत्तला की, और पैसे जमा हो गए।

प्रकाश चन्द जैन

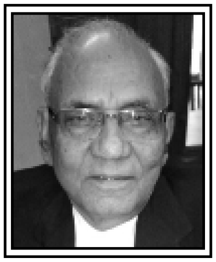

सीताराम जोशी
एडवोकेट
राजस्थान उच्च न्यायालय

राजस्थान उच्च न्यायालय के आदर्श एवं स्वाभिमानी न्यायाधिपतियों में श्री जे.पी. जैन साहब का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। वे उच्च न्यायालय के योग्य अभिभाषकों में से एक थे। मैं सन् 1970 में कलकत्ता से वकालत करने हेतु जोधपुर आया था। उनका व्यक्तित्व गम्भीर एवं आकर्षक था। चूंकि मैं कुछ दिन बिना पोशाक के जाता था तथा उनको देखते ही नमस्कार करता था इसलिए वे मुझे कोई पक्षकार समझते थे। उन्होंने एक दिन मुझसे पूछ ही लिया कि मैं किस केस के लिए आता हूं तो मैंने जबाव दिया कि सर, मैं कलकत्ता से यहां वकालत करने आया हूं। वे तुरन्त बोले, अरे! यहां के लोग कलकत्ता जाते हैं, तुम आ रहे हो। यह व्यवहार उनका अनजानों के प्रति सद्भाव व स्नेह प्रदर्शित करता है। कुछ दिनों में वे उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति नियुक्त किये गये।

श्री जैन, असाधारण प्रतिभावान तथा अत्यन्त निर्भीक व्यक्तित्व के स्वामी थे। शुरूआत में वे न्यायाधिपति के अस्थाई पद पर नियुक्त किये गये थे। साधारणतया, अभिभाषक न्यायाधिपति बनने के लिए आतुर रहते हैं तथा स्वाभाविक रूप से चाहते हैं कि उनकी नियुक्ति स्थाई न्यायाधिपति के रूप में शीघ्र हो जाये क्योंकि यह एक संवैधानिक एवं प्रतिष्ठामय पद है।

सामान्य प्रक्रिया में मुख्य न्यायाधिपति को उन्हें स्थाई न्यायाधिपति की नियुक्ति देने हेतु कानून मंत्रालय को सिफारिश भेजनी थी मगर मुख्य न्यायाधिपति चाहते थे कि श्री जैन इस विषय में उनसे अनुरोध करें। जैन साहब स्वाभिमान के धनी थे अतएव उन्होंने अपने मित्र साथियों से कहा कि वे स्वयं के लिए मुख्य न्यायाधिपति को कोई सिफारिश नहीं करेंगें । अगर उन्हें स्थाई नहीं किया गया तो कोई परवाह नहीं है क्योंकि वे फिर से वकालत शुरू कर देंगें, परन्तु स्वयं की हित साधना का कोई प्रयास नहीं करेंगे। विधि मंत्रालय ने इस विषय में माननीय मुख्य न्यायाधिपति से जैन साहब का नाम स्थाई न्यायाधिपति की नियुक्ति के लिए भेजने की सिफारिश करने की सलाह दी तदुपरान्त वे स्थाई न्यायाधिपति नियुक्त किये गये। मुझे कलकता, बम्बई, मद्रास, बैंगलोर, दिल्ली एवं अहमदाबाद उच्च न्यायालयों में भी वकील के रूप में जाने का समय–समय पर अवसर मिला।

मैंने श्री जे.पी.जैन साहब जैसा निर्भीक एवं संवेदनशील न्यायाधिपति नहीं देखा। यह प्रसंग इसलिए स्मरणीय है कि भारत के न्यायिक इतिहास में ऐसे निर्भय व्यक्ति का होना प्रेरणादायक होने के साथ–साथ दुर्लभ भी है। यह कहना प्रासंगिक होगा कि आज राष्ट्र को ऐसे ही न्यायाधिपति चाहिए जो पद की गरिमा को बनाये रखते हुए ईमानदारी एवं निर्भीकता से कार्य करें।

उस समय के एक प्रसंग का स्मरण भी उल्लेखनीय है। सन् 1970 में जब मैंने जोधपुर उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की तो बहुत मेहनत से एक प्रकरण को तैयार कर बहस की थी जिसे न्यायाधिपति श्री जैन ने सुनकर निरस्त कर दिया था। यह न्यायालय की एक साधारण प्रक्रिया थी। यह उल्लेखनीय है कि माननीय न्यायाधिपति श्री जैन को लगा कि उनका आदेश गलत था अतएव उन्होंने मुझे चेम्बर में बुलाकर रिव्यू पेश करने का सुझाव दिया तथा मेरे द्वारा ऐसा करने पर उन्होंने अपने पूर्व पारित आदेश को निरस्त कर दिया। यह उनके खुले दिमाग एवं न्याय के प्रति निष्ठा के गुण को दर्शाता है।

एक अन्य केस में जो रेन्ट कन्ट्रोल कानून से सम्बन्धित था, उसमें मैंने जस्टिस जैन की अदालत में बहस की मुझसे उन्होंने कहा कि मैं कोर्ट को मिसलीड कर रहा हूं, मैंने शालीनता से जबाव दिया कि मेरा न तो ऐसा इरादा है और न ही मैं ऐसा कर सकता हूं। कुछ अभिभाषक जरूर कहते हैं कि वे अदालत को मिसलीड करते हैं। फिर तो उन्होंने मुझसे अभिभाषक का नाम भी पूछ लिया तथा मेरे नाम बताने पर उस अभिभाषक को न्यायालय में बुलाया तथा समझाया कि ऐसा नहीं करा करें। इस उदाहरण के उल्लेख करने का तात्पर्य यह है कि वे अपने मन में किसी के लिए द्वेष नहीं रखते थे तथा जो कहना होता था, वे स्पष्ट रूप से न्यायालय में कह देते थे। कानून के विषय में उनकी सोच स्पष्ट होती थी तथा वे बिना किसी द्वेष या पक्षपात के न्याय करते थे।

न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र जैन ने अपने पिता के संस्कार एवं आदर्शों को अपनाया है। उनके द्वारा अपने पिताश्री की स्मृतियों को स्मारिका द्वारा प्रकाशित कराना अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय कार्य है। मुझे विश्वास है कि नई पीढ़ी श्रीमान् जे.पी.जैन साहब के आदर्शों एवं सिद्धान्तों को आत्मसात करेगी जिससे उनका भविष्य उज्जवल बन सकेगा।

शताब्दी वर्ष पर मैं उनको शत्–शत् प्रणाम करता हूँ।

सीताराम जोशी

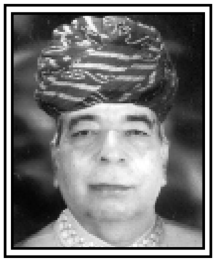

ओम प्रकाश प्रधान
एडवोकेट
कुचामन सिटी

मेरे प्रेरणास्रोत

आदरणीय श्री जे.पी.जैन साहब के व्यक्तित्व व कृतित्व से स्पष्ट होता है कि अगर कोई अपने दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास, मेहनत व ईमानदारी से खुश रहकर काम करे तो अपनी मंजिल प्राप्त कर सकता है।

श्री जे.पी. जैन साहब अतुलनीय व्यक्तित्व के धनी थे। मैंने मेरी वकालत का कैरियर उन्हीं की छत्र छाया में प्रारम्भ किया था। उस वक्त ऑफिस में सर्वश्री उत्तमजी, सवाईसिंहजी, नारायण जी, माहेश्वरीजी, भण्डारी साहब आदि कई वकील मेरे साथ काम करते थे। उनकी योग्यता के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है, पहला पाठ जो हम लोगों को पढ़ाया, वह यह था कि वकालत में कभी शॉर्टकट में विश्वास मत रखना, लगातार मेहनत करनी होगी। कोर्ट में ध्यान से बैठो, केस सुनो । काम नहीं होने पर जर्नल के हैड नोट समय–समय पर पढ़ते रहोगे तो अपने आप ज्ञान में वृद्धि , शार्पनेस, क्लेरिटी व टू दी पाईन्ट बहस करने की आदत बनेगी।

श्री जे. पी. जैन साहब समय के बहुत पाबन्द थे, यहां तक कि नगेन्द्र बाबू की शादी में बारात भरतपुर व फिर आगरा बिल्कुल समय के अनुसार पहुंची जिसका सबने ताज्जुब किया। अपने जीवन में किसी कार्य में समय सीमा में न तो स्वयं शिथिलता बरतते थे ना ही कभी भी किसी अन्य के द्वारा किया जाना पसन्द करते थे। वो सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे।

एक प्रशिक्षु के रूप में उनके पास मैंने 1967 में अपना कैरियर प्रारम्भ किया तब राजस्थान उच्च न्यायालय में श्री दौलत मल भण्डारी वरिष्ठ न्यायमूर्ति हुआ करते थे। किसी कारण से वे कोर्ट में उपस्थिति नहीं देते थे, पर पुराने केस लगने पर एडजोर्नमेंट की जगह बड़े मुकदमों में सर्वश्री एम.सी.भण्डारी, एन.एम.कासलीवाल, एच.पी.गुप्ता आदि उनके स्थान पर पैरवी करते थे और अन्य मुकदमों में यंगस्टर्स वकील को ब्रीफ कर देते थे, वह जाकर बहस कर आता था। बाद में नगेन्द्र बाबू कोर्ट में

जाने लगे। नये केस नहीं लेने से उन्हें नुकसान हुआ, पर कभी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। मुझे ठीक से याद है कि उनके पुत्र नगेन्द्र बाबू के विवाह उपलक्ष पर हुये भोज में श्री दौलत मल भण्डारी पधारे और जैन साहब ने उनका प्रेमभाव से आदर सत्कार व सम्मान किया।

श्री जैन साहब अनुशासन प्रिय व्यक्ति थे न सिर्फ कार्यालय में, घर पर भी उन्हें किसी की अनुशासनहीनता अच्छी नहीं लगती थी। कार्यालय में विलम्ब से आकर सफाई देने वाला व्यक्ति भी उन्हें पसन्द नहीं था। गलती को उनके समक्ष स्वीकार कर लेने पर माफ कर देते थे।

जैन साहब ने अपने प्रियजन श्री धर्मपाल जी, हर प्रसाद जी व वकालत के समय कार्यरत स्टेनो, टाइपिस्ट का काम करने वाले सर्वश्री साकलचन्द, राजाबाबू, और बाद में जज के समय अपने स्टेनो सर्वश्री आर. सी.वैद्य, बोहरा जी व अन्य के काम की सराहना की। जयपुर के समय उनके साथ काम करने वाले बी.एन.शर्मा, कुरैशी, राधेश्याम आदि द्वारा किए गए अच्छे काम का जिक्र करना नहीं भूलते थे। उन सभी से उनका घर जैसा संबंध रहा। उनमें प्रोत्साहित करने का गुण था। उनमें गंभीरता, सबको लेकर चलने की क्षमता और कार्यों के प्रति समर्पण देखा।

जैन साहब के हर व्यक्ति से अच्छे सम्बन्ध थे। चाहे वो जूनियर हो, चाहे वो सीनियर हो। वे यंगस्टर्स को समय–समय पर अच्छी सलाह देकर प्रोत्साहित करते थे। जज बनने के बाद भी उनके व्यवहार में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं आया, परन्तु टू दी पाईन्ट बहस करने को वे अच्छा मानते थे। अगर वकील बिना बात के किसी भी विषय के बारे में बार–बार बहस करते थे, तो वह उनको नागवार था। वे वकील के पाईन्ट को रिपीट कर देते थे, और अगले पाईन्ट पर बहस करने को कहते थे। फैसला ज्यादातर हाथ की हाथ लिखाने का प्रयास रहता था। उन्होंने अपने 5 साल के न्यायमूर्ति के कार्यकाल में बहुत ही सहज भाव, ईमानदारी व निर्भीकता से काम किया । अच्छे निर्णय दिए जो आज भी रैफर किए जाते हैं। उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला।

आदरणीय जैन साहब, सहनशील, सज्जन और अपने आप में एक इंस्टीट्यूशन थे। उनका हार्ट उनके लीप पर था। यह मेरा सौभाग्य रहा कि मैं उनके सान्निध्य में रहा व अंतिम समय में भी घर पर था। उनके शताब्दी वर्ष पर मेरा कोटि–कोटि नमन

ओम प्रकाश प्रधान

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

राष्ट्रपति–सम्मानित महामहोपाध्याय
भूतपूर्व अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी
एवं निदेशक, संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
अध्यक्ष, आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा.राजस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय
प्रधान सम्पादक, ''भारती'' संस्कृत मासिक
सदस्य, संस्कृत आयोग, भारत सरकार

शुभाकांक्षा

एक वरिष्ठ विधिवेत्ता और सक्रिय समाजसेवी न्यायमूर्ति श्री जगदीश प्रसाद जैन का नाम आते ही मेरी स्मृतियों में उनकी सज्जनता की छवि उभर आती है। बावन वर्ष पूर्व के वे दिन भी स्मृतिपटल पर आ जाते हैं, जब उनसे परिचय हुआ था। उस समय वे एक यशस्वी विधिवेत्ता और वकील के रूप में समाज में अपना प्रतिष्ठित स्थान रखते थे। जयपुर में सी–स्कीम स्थित उनका भवन राजस्थान के सचिवालय के निकट ही स्थित था। राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी की प्रशासन में प्रतिष्ठापना करने हेतु राजस्थान सरकार में भाषा विभाग नामक एक नये विभाग का गठन सातवें दशक में हुआ था। यह विभाग अपनी स्थापना के तुरन्त बाद से अनेक वर्षों तक जे.पी.जैन साहब के भवन में (किराये पर) स्थापित रहा था। 1965 ई. से 1994 तक मैं इस विभाग की सेवा में विभिन्न पदों पर रहा था। 1965 में सहायक निदेशक पद पर मैंने कार्यग्रहण किया था। तभी से कुछ वर्षों तक जैन साहब के भवन में इस विभाग में रहने के कारण उनसे सम्पर्क होता रहता था।

न्यायमूर्ति श्री जे.पी.जैन की प्रतिष्ठा न केवल विधिवेताओं अथवा जैन बंधुओं के समाज में थी, बल्कि जोधपुर और जयपुर के प्रबुद्ध समाज में भी वे एक सक्रिय विचारक, समाजसेवी तथा उत्कृष्ट छवि के सुयोग्य पुरूष के रूप में प्रतिष्ठित थे। बाद के दिनों में उनका निवास जोधपुर में अधिक रहा किन्तु विधि और न्याय के क्षेत्र में कार्यरत सभी वरिष्ठजन जयपुर में भी उन्हें पूर्ण आदर से याद करते थे। एक सक्रिय तीव्र बुद्धि वाले न्यायप्रेमी, प्रेरणापुरूष के रूप में उनकी छवि विधिक्षेत्र में

भी थी, जैन समाज में भी थी और जयपुर निवासी वरिष्ठ नागरिकों के समाज में भी। सितम्बर 1975 में जब अचानक उनके दिवंगत होने का समाचार जयपुर में प्राप्त हुआ, तो उनसे परिचित सभी सहयोगियों के ह्दय को आघात लगना स्वाभाविक ही था।

उस समय सभी वरिष्ठजनों ने उनके कृतित्व का स्मरण करते हुए न्यायाधिपति के रूप में उनकी प्रतिष्ठा का उल्लेख तो किया ही, इस बात पर भी सन्तोष प्रकट किया कि उन्होंने इतनी सुयोग्य अगली पीढ़ी छोड़ी है जो उनकी प्रतिष्ठा की पताका को और भी ऊँचा उठाएगी। यह क्या कम गौरव की बात है कि उनके पुत्र न्यायमूर्ति श्री नगेन्द्र कुमार जैन उच्च श्रेणी के विधिवेत्ता और न्यायाधिपति तो रहे ही वहीं मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालयों में मुख्य न्यायाधिपति रहते हुए उन्होंने राजस्थान का गौरव भरपूर तरीके से बढ़ाया। वे मानवाधिकार आयोगों तथा अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष भी रहे हैं।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि बीसवीं सदी के मध्य में प्रतिष्ठित न्यायवेत्ता श्री जे.पी.जैन साहब के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय देने हेतु यह स्मारिका श्री एम.एल. धोंकरिया द्वारा तैयार की गई है। निश्चित ही इस पुस्तक से सभी तरह के पाठकों को न केवल उनका परिचय मिलेगा अपितु प्रेरणा भी मिलेगी, कि निरन्तर लगन और सक्रियता से किस प्रकार मानव पूरे समाज को प्रेरणा दे सकता है, अगली प्रतिष्ठित पीढ़ी तैयार कर सकता है और भावभीनी स्मृतियां छोड़ सकता है।

पुस्तक के प्रणयन हेतु सभी सहयोगीगण भरपूर बधाइयों के पात्र हैं। सभी को मेरी शुभाकांक्षाएं प्रेषित हैं।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

तेरा वजूद किसी तरीफ का मोहताज नहीं,
तू कदम तो बढ़ा, रास्ते खुद बन जाएंगे।

Dr. Pratibha S. Bhargava
Retd. Associate Professor
Delhi University, Delhi

I am happy that I have been remembered and asked to write a few words as my 'tribute' for uncle, late Mr. Justice J. P. Jain on his centenary year.

I have gone into my green memory over about 60 years back, which reminds me of the good old days of my college, badminton and sports coaching camp at Mount Abu (between 1956-62).

I started playing badminton since 1954. National Badminton Championship was organised at Jaipur in 1955. Her Highness late Maharani Gayatri Devi used to play badminton and had also played in Nationals in mixed doubles in 1955. My elder sister Krishna Bahanji in women and Nagendra in juniors represented state in 1955. In 1956 with another sister Sarla BahanJi, he represented Rajasthan Badminton Team in Nationals at Delhi. H.H. Late Maharani Gayatri Devi became the President of Badminton Association of India. I became State Champion in women and also in mixed doubles with Nagendra, between 1959 to 1961. I Joined as Lecturer in English in Maharani's college in 1961.

My family and I became very intimate family friends of Justice J.P. Jain which is still maintained since 1954. My father, Shri S. Sawroop who retired from AG office, had good tuning with uncle. Our family used to call Aunty Mrs. Jain as Mausi.

We all players were like a family. During tournament days uncle used to call the team at the house for tea. Uncle was tall, handsome, sober, and a disciplined person with sportsman qualities. He always showed concern and encouraged, Badminton players.

Uncle Jain, was a man of values. We never hesitated in talking to him, despite the fact that he was one of the top lawyers and an eminent person of Jaipur. He was admired by the players for his good qualities of simplicity, politeness and frankness with clear heart. He was loyal and sincere to all concerned, in particular to me. His qualities of head and heart, compassion, kindness and showing the right path to one, and all, were his hallmarks. I have learnt a lot from him, which paid me dividend in my teaching career and in later life.

By commendable work of publication of this Book. I hope the younger generation will cultivate the good virtues and humane qualities of Justice Jain, and it will be a source of inspiration to them as well.

Sadar Naman, I convey my respectful Shradhanjali to my Uncle, late Justice J. P. Jain.

Dr. Pratibha S. Bhargava

If life is on the earth temporary....

Then what makes you think

that your problems are

permanent.

—

You can't change the truth

but the truth can change you.

Follow righteous path.

Diana Kappen

Coimbatore

I am deeply touched on being asked to pen my thoughts on Daddy, for that is how we all fondly called this wonderful person Justice Jain.

I first met Daddy in the year 1966 in Jaipur, when I was studying at University and staying with my aunt Dr. Bridget Joseph, who was then a practicing gynaecologist. Aunty was a good friend of Daddy and his family, a friendship that commenced in 1942 in Alwar, and has lasted to date - a good 75 years.

Speaking of this friendship, brings back memories of Aunty's colleagues and friends who were also a part of this binding association. Though I had not met some of them, Dr. Chinnamma, Dr. Zachariah, Dr. Jacob, Dr. Thangam, Dr. Sethi, Dr. Laxmi, Dr. Thomas and Dr. Deenamma and her husband Kurian uncle were very often spoken of with utmost fondness by Aunty and Daddy, which conveyed the depth of their closeness.

This closeness and affection continues to this day, by way of the efforts made by Daddy's family to keep in touch. Aunty, is now a frail 97 year old, living with her niece Remola (my sister) in Kerala. Just a few months ago, Daddy's son Baby (Justice N. K. Jain) who resides in Jaipur, paid her a visit at Tirchi - a touching gesture and a much appreciated effort to maintain life-long ties.

We, her nieces (Helen, Ethamma and myself) and nephews (Joy and Cyril) who were then studying/working in Udaipur/Jaipur/Jodhpur - the different cities where Aunty had worked, had the privilege of acquainting ourselves with Daddy - this gem of a person. It would be perfectly appropriate to mention the fondness and affection with which my cousins Helen and Cyril recalled their time with Daddy and his family, when I got in touch with them to voice their thoughts on him. Each recalled Daddy as a warm and giving person - their confirmation of my description of him. I am positive that even Joy, my late brother, would have whole-heartedly agreed with us. That was the extent of the magnanimous nature of this sweet man.

I have very fond memories of Daddy and his family. Amma - Daddy's wife, and Baby, Bachi, Meena, Babbu, Baba, Bob and Late Guddu - Daddy's children and Bhabhi Aruna, though we lost her, will always have a special place in my heart. Having come from a small village in Kerala, with limited knowledge of spoken English and Hindi, and being very conscious of it too, the big-heartedness and easy friendliness of Daddy and his family put me at ease and encouraged me to open up. Daddy's kindness, hospitality and affectionate nature are some of the endearing qualities that I will always remember. Recalling the love with which we would be welcomed by Daddy and his family on every occasion brings back memories of the delightful time we had.

Being a large-hearted man, Daddy's hospitality and affectionate nature did not stop with just me. A few years later, in 1968, as a newly wed, I remember the warm and affectionate welcome he extended to my husband Group Capt. M. C. Kappen, on the occasion of his eldest son Baby's wedding with dear Aruna in Agra. It was a welcome that my husband, now retired as Group Captain, still fondly recalls.

The immense concern Daddy showed for the safety and well being of my husband when the Indo-Pakistan war broke out in 1971, is a fitting illustration of his caring and considerate nature.

People come and go in our lives. Some are forgotten for the inconsequential effect they have had in our lives, while others are unforgettable for the momentous and lasting impact they have made in our lives – whether good or bad, happy or sad, positive or negative. Daddy is one such unforgettable person. He was a great example of generosity and graciousness.

While Aunty would have been extremely happy to pay this tribute if her health had permitted her to, I am sure she would willingly and confidently vouch for all that I have written.

I am thankful to have known Daddy, and feel fortunate and blessed to pay this tribute on the occasion of his Birth Centenary celebrations. Having done so, I however must add that no words of praise can do justice to this marvellous and lovely person whom we all fondly called "Daddy".

Diana Kappen

Gopi Krishna Sidha 'Pragaya' अणुव्रत सेवी
General Secretary
State Council for Public Schools, Rajasthan

I feel deep pleasure to express my gratitude on the birth centenary year of Late Justice J. P. Jain. I came in contact in 1952 when I was living at Govind Bhawan in New Colony, Near Panch Batti. Justice Jain was the well known renowuned personality of the New colony. It was the modern place for living the high profiles.

In the field of judiciary in Rajasthan Jaipur City Justice J. P. Jain was the eminent lawyer. There were few eminent lawyers in Rajasthan like C. L. Agarwal. Justice J. P. Jain was one of them. He was the inspiration to the young advocates. I see no words to speak high of him.

He was self-contended high profile with strong will. He was symbol of Justice in the field of judiciary. It is enough to say about Justice J. P. Jain that he was a born noble advocate with all great attributes.

Being in education profession I remined deeply attached and closely associated with the family till today.

He was strong, disciplined, dedicated, devoted, discriminated firm determined personality with great love for the clients in the noble profession of judiciary. Justice J. P. Jain was very kind hearted and very possessive to humanity and great lover of Justice. He fought throughout his life for justice.

The blessings of my religious Guru "Acharya Tulsi and Acharya Maha Pragya" will give strength to Justice N. K. Jain to glorify the charm of his unforgetful beloved father. He was a great lover of sports. It will be the real homage to the departed soul. On this pious occasion of his 100^{th} birth centenary this year I pay my heart-felt tribute to him. Justice Shri J. P. Jain was a great pride and honour to the family and friends.

G. K. Sidha "Pragya"

श्री नरेन्द्र कुमार कौशिक

सेवानिवृत अधीक्षण अभियन्ता

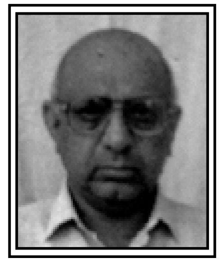

आदरणीय जैन साहब सन् 1951–52 में 5 न्यू कॉलोनी, पांचबत्ती, हमारे मकान के सामने आकर रहने लगे। उनके बड़े लडके नगेन्द्र हम उमर होने की वजह से मेरे ज्यादा नजदीक हो गये। वैसे सभी पड़ोसियों के बच्चे राजेन्द्र, देवेन्द्र, नन्दा, कैलाश, ब्रजेश, नारायण, हर्ष, गोगी, प्रकाश, नरेन्द्र, रतन, सुधाकर, आदि रोजाना, 4, न्यू कॉलोनी, श्री एल.एन.शर्मा के मकान के ग्राउण्ड में खेलते थे। मैं तभी से जैन साहब को बाऊजी कहने लगा।

बाऊजी जानते थे, खेलों से शारीरिक व मानसिक विकास होता है। व्यस्त रहने के बावजूद वे स्वयं भी जय क्लब टेनिस खेलने जाते थे और हमको खेलने के लिए प्रोत्साहित करते थे। वे कहते थे खूब खेलो और हर खेल के अच्छे मैचों को देखो जिससे खेल के बारे में जान सकोगे और खेलने से आप में अनुशासन, धैर्य, त्याग, संयम, समानता, समय की पाबन्दी के गुण पैदा होंगे। हार में भी उम्मीद रखो। इससे भावनात्मक विकास, स्वयं पर नियत्रंण बनाए रखने की क्षमता बनाए रखने का गुण विकसित होगा। ह्यूमन वेल्यूज के साथ सकारात्मक सोच डवलप होगी व खेल भावना का विकास होगा, जो हमेशा तुम्हे जीवन में आगे बढाएगा।

सन् 1952 से 1957 के बीच में, तो हमने जयपुर में हर बड़ा टूर्नामेंट, उदाहरणार्थ क्रिकेट में वेस्टइंडीज के सर वारल Vs महाराज जथ की टीम, जिसमें वीणु मांकड, विजय हजारे, एस.पी.गुप्ते, मांजरेकर, पॉली उमरीगर, एस.के.जिब्बु का टेनिस में रामानाथ कृष्णन, प्रेमजीत लाल, मुखर्जी, अख्तर अली का बास्केट बॉल में खुशीराम, विष्णु, देवेन्द्र सिंह का एथलेटिक्स में करणी सिंह, बर्नी, प्रतापसिंह का फुटबाल में बैनर्जी, विरेन्द्र सिन्हा, महाराज स्वरूप सिंह का कुश्ती,

कबड्डी, पोलो, टेबिल टेनिस में गौतम, इन्दू मेहता, ओड़ी, प्रमोद व डब्लू का बैडमिटंन में नन्दूनाटेकर, टी.एन.सेठ, अरलेनकार्पस, फ्रेककोबेरो, रूडीहरटानो, नोगबोग बी, आदि के कई खेल देखे। इस प्रकार संबंधित गेम्स के देश के अच्छे खिलाड़ियों को देखने, मिलने, समझने व सीखने का मौका मिला। क्रिक्रेट में एम.सी.सी. इण्लैण्ड व आर.सी.ए. की टीम व कुश्ती में दारासिंह, किंगकॉग, जोगेन्द्र सिंह आदि के साथ बतौर वॉलिटियर काम किया डॉ. भार्गव, एल.एस.कोठारी, दिनेश स्वामी, नृपेन्द्र भार्गव, ब्रजेश के साथ नगेन्द्र तो सन् 1954 से ही बैडमिटन के अच्छे खिलाड़ियों में शुमार हो गया था। मेजर ध्यानचन्द राजस्थान की टीम में गोलकीपर रहते थ। पीरू, आर एस ऐन्टिल, राष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ माउण्ट आबू में हम बैटमिंटन कैम्प के खिलाड़ी खेले। मिल्खासिंह, मक्खनसिंह को भी ओलम्पिक की तैयारी करते देखते थे व एक–दो बार उनके साथ दौड़े भी।

बाऊजी ने सन् 1956–57 में सी–स्कीम में अपना मकान बनाना शुरू किया। परन्तु बैंच, जयपुर से जाने की वजह से मकान का आधा हिस्सा भी कम्पलीट नहीं हो पाया और वे सन् 1958 में जोधपुर चले गये। उनको कार्य में किसी भी तरह शेबिनेस पसन्द नहीं थी, खासतौर से मकान के बारे में। अपने बेटेकी तरह से मुझ पर विश्वास करते थे और मेरे को मकान की देखभाल व मरम्मत की जिम्मेदारी दी। यहां फैमिली व मकान को देखने आते रहे। मेरे काम की अम्मा जी से तारीफ करते व खुश होकर हमेशा प्रोत्साहित करते रहे।

ब्रजेश के बड़े भाई जो टाटा टी गार्डन्स् में मुन्नार व गोहाटी में काम करते थे, ब्रजेश व नगेन्द्र को टी गार्डन्स् में काम दिला रहे थे। श्री गज्जी भैया उन्हें राजकुमारी कोचिंग स्कीम, पटियाला में कोच की ट्रेनिंग के लिए भेज रहे थे। इसी तरह बाद में नगेन्द्र को बर्मा शैल कम्पनी, ए.जी. ऑफिस, इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट में नौकरी मिल रही थी। उस पर बाऊजी ने समझाया कि खेल को सिर्फ हॉबी रखो, और इसके आधार पर अगर अभी नौकरी कर ली, तो अण्डर ग्रेजुएट ही रहोगे।

वैसे बाऊजी नगेन्द्र को मेरी तरह इंजीनियर बनाना चाहते थे, परन्तु वह इंजीनियर नहीं बना। शार्ट सर्विस कमीशन आर्मी व जीडी पायलेट एयरफोर्स में भी नहीं जा सका। डेस्टिनी कुछ और थी। मेरा छोटा भाई सुरेन्द्र बाबूजी के टिप्स व आशीर्वाद लेकर फौज से बिग्रेडियर के पद से रिटायर हुआ व वीर चक्र से भी सम्मानित हुआ।

उस वक्त के हम सभी साथी उनकी सीख "You Should Stay true to your self" पर चले। इससे हमारे चरित्र निर्माण में असर पड़ा व खेल भावनाओं की वजह से अपने–अपने फील्ड में अच्छे मुकाम पर पहुंचे, सफलता मिली, वेल्यूज के साथ सकारात्मक सोच रहा व आनन्द से ओतप्रोत ही रहे। By nature he was kind, generous and a gentleman.

उनका जज बनना, उनकी काबलियत का इनाम था। व्यवसाय के बारे में उनके विचार नियमानुसार थे :

"There are three ideas involved in a profession : organization, learning and a sprit of public service. These are essential, The remaining idea that of gaining a livelihood is incidental."

सब कुछ सही चल रहा था परन्तु दुर्भाग्य से मुझे एक दिन बाबूजी के आकस्मिक निधन की सूचना प्राप्त हुई। अब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

नरेन्द्र कुमार कौशिक

ख्वाहिशें तभी मुक़म्मल होती हैं...
जब तलब भी शिद्दत भरी हो !!!
Be passionate -

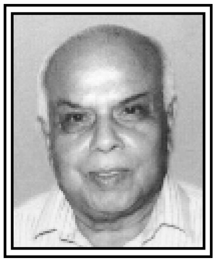

Dr. T.P. Jain

Retired Professor Preventive and
Social Medicine
SMS Medical College, Jaipur

I feel proud to say that my uncle, Late Justice J. P. Jain was a great jurist, person of robust common sense with a flowery and facile pen, whose judgments are and will always adorn the library of Advocates, High Court's and all those who want to understand the intricate problems of law in simple lucid language. Above all, he was a great human being with humanity and compassion.

I joined Medical College after passing B.Sc. First Year in 1947 from Agra. While I was in second year MBBS, some students were involved in ragging of newcomers in 1948-49. But, unfortunately administration involved me with other students for taking part in ragging. The then Principal Dr. S. S. Mehta slapped me without hearing me.

And for this episode students went on strike. However, I narrated the matter to my Advocate uncle Shri J. P. Jain. He took this matter seriously. As my uncle never tolerated injustice, he immediately visited college and confronted with the students and with the Principal.

On inquiry, I was proved innocent and the Principal expressed sorry for his behavior and tendered apology. On account of intervention of my uncle the strike was called off and thereafter he become 'Uncle' of my classmates and friends.

Chacha told me, that he was not selected in college Hockey Team for want of being local person one professor of English Mr. Mathur advised him "Don't get disheartened and you

should keep yourself ready during the matches". After some time, one day 1 to 2 players were to be replaced due to injury in the match, and Chacha was called. He joined the team and showed his skill. Thereafter, he always remained in the team.

The humanitarian aspect, and good qualities of a legal luminary like late Justice J. P. Jain are to be cherished, preserved and perpetuated.

A man with versatile personality, he always remained cheerful and used to enjoy his daily routine life happily. He was a friend, philosopher, guide & teacher to me. I inculcated good humane qualities from him. They were helpful in discharging my duties in my profession and life.

May his soul rest in peace.

Dr. T. P. Jain

Every successful person has painful story,
every painful story has a successful ending.
So accept the pain and get ready for success.

Don't worry about what you think.....
Most people don't exert their brain very often.
Keep going.

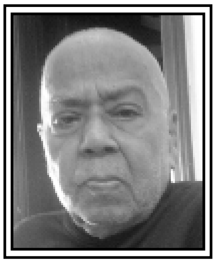

S.P. Jain
Retired Principal
Rajastahn College, Jaipur

Profile in Courage

I am glad to say that I had an opportunity to work after passing LLB from Agra, in the office of my uncle Late Shri J. P. Jain between year 1953 to 1957 at Jaipur. We were seven advocates in his office helping/assisting him. I found him to be a hard working person, and a tough master. He was upright and outspoken gentleman with a rare virtue of appreciating good work of others.

He used to tell us that dedication, devotion, determination and innovation are the key to success. He further made us to know that success is a continuous journey, and not a destiny.

He was strong, bold & worked with his conscience throughout and could take strong decisions with a strong will. He had a capacity to implement them. He was a man of values with immense dedication.

He had inherited human values, simplicity with attitude to help deserving and needy persons from his parents. He helped and encouraged many persons and also advised law graduates to join this noble profession.

He fought for Justice (Law students, doctors, teaching community and administrative personnel). He loved people and used things, but did not use people for things.

He was always secular in his behavior. He was always well prepared and punctual in court and reached the top in the profession.

As a Judge, he kind heartedly treated both senior and junior lawyers alike. He was liked by brother Judges. I was also blessed and nurtured by him, which helped me in my career as a teacher.

His judgments are always valuable and the principles laid down in his judgments are being followed in present scenario also.

The young generation will always admire his good virtues. His good qualities will be a source of inspiration to all of us. We have to inculcate his good qualities.

With the grace of God and blessings of parents and good wishes of all, his son Justice N. K. Jain has followed the footsteps of late father, Justice Shri J.P. Jain Sahib.

S. P. Jain

*** Your problem is not a problem,**
your reaction to it is
the problem

*** That is the difference**
between the little more and little less.

*** If it is important to you, you will find a way,**
If not, you will find an excuse.
Stop, stopping yourself.

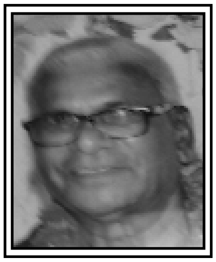

देवेन्द्र कुमार जैन

सेवानिवृत सीनियर रेलवे गार्ड
आबू रोड़

मैं देवेन्द्र कुमार बांदीकुई से जयपुर अपने चाचा आदरणीय श्री जे.पी.जैन साहब के पास आया । उनके घर में रहकर मैंने महाराजा कॉलेज में फर्स्ट ईयर में वर्ष 1957 में प्रवेश लिया। मैं 58–59 साल पुरानी बातें याद कर रहा हूँ। उस वक्त प्रो. के. एल. वर्मा, सोमनाथ गुप्ता, आर.एस.कपूर, आदि कॉलेज के प्रिंसिपल हुआ करते थे।

चाचा अनुशासन के मामले में बहुत सख्त थे। पढ़ाई व खेल के अलावा कुछ नहीं कहते पर उनसे सभी डरते थे, परन्तु उनके मन में जरूर करूणा का भाव था।

मुझे कसरत व फुटबाल का शौक था। भरतपुर, अलवर फुटबाल की टीमों के साथ इंटर कॉलेज के लिए व अजमेर में यूथ फेस्टिवल के समय देखा कि पूर्व खिलाड़ियों की आपसी नाराजगी का असर हम पर व हमारी अन्य टीमों के खिलाड़ियों पर होता था। जबकि मेरे चाचा खेल को खेल की भावना से खेले जाने के पक्षधर थे।

हम जयपुर विभिन्न खेल देखने के अलावा थिएटर, ड्रामा भी देखने जाते थे क्योंकि अरूण माथुर हमारा पड़ोसी अपने अन्य कलाकार साथियों इसरानी, मोहन महर्षि, मणिकौल, जोधपुर के नटवर, कैलाश पुरोहित, ओमपुरी आदि के ड्रामे हमें दिखाता था। वहां तक कोई समस्या नहीं हुई पर एक बार संगीतकार कल्याणजी आनन्द जी का कार्यक्रम पोलो विक्ट्री सिनेमा में चल रहा था। इस कार्यक्रम का आखिरी दिन होने के कारण हम इसे देखने चले गये। आने पर चाचा ने पूछा, कहाॅ थे, क्या तुमको मालूम नहीं था कि ताऊजी को आज घर बदलकर स्वयं के घर जाना था फिर भी तुम यहाॅ नहीं थे। फिर हमसे पूछा; क्या सिगरेट पीकर आये हो, हमने कहा नहीं, पर कपड़ों से

सिगरेट की बदबू आ रही थी, क्योंकि अन्य सीटों पर बैठने वाले लोगों ने कार्यक्रम के दौरान जमकर सिगरेट पी थी। इस बात पर आदरणीय चाचाजी ने इतनी जोर से डांटा व कहा कि सच नहीं बोलोगे, तो दोनों को पेड़ पर लटकाकर पिटाई करूंगा।

हमने सच–सच बताया कि प्रोग्राम में गये थे। धूम्रपान नहीं किया और माफी मांगी। झूठ उनको बिल्कुल पसन्द नहीं था। उस रोज के बाद हम हमेशा सच बोले और गलती पर हमेशा उन्होंने माफ किया।

इस तरह का एक और किस्सा है, एम.आई. रोड पर स्थित क्वालिटी स्टोर, जो उनका क्लाईन्ट भी था, उससे हम सामान लेते थे। हमने शर्त के चक्कर में एक गिफ्ट आईटम उठाकर जेब में रख लिया। उसने देख लिया। जब जाने लगे तो स्टोर वाला बोला, यह क्या है हम घबरा गए। उसने हमसे कहा; ''आप इतने बड़े वकील के बेटे हो, ऐसी हरकत करते हो, जो चोरी की श्रेणी में आता है अब या तो मैं वकील साहब से शिकायत करूं या पुलिस को बुलाऊं।'' हमने माफी मांगी, काफी गिडगिड़ाए। उसने कहा आईन्दा इस तरह की शर्त कभी मत लगाना।

इस प्रकार हमारे चाचा के सख्त व्यवहार के कारण व उनके समझाने पर जिन्दगी में आज तक हम झूठ नहीं बोले। ईमानदारी से सच ही बोले।

देवेन्द्र जैन

''गलती पर साथ छोड़ने वाले तो बहुत मिलते हैं
पर गलती पर समझाकर साथ निभाने वाले बहुत कम मिलते हैं।
हमारी, सभी अंगुलियाँ लम्बाई में बराबर नहीं होती है,
किन्तु वे जब मुड़ती हैं तो बराबर दिखती हैं।''
''इसी प्रकार यदि हम किन्हीं परिस्थितियों में
थोड़ा सा झुक जाते हैं या तालमेल बिठा लेते हैं
तो जिन्दगी बहुत आसान व आनन्दित हो जाती हैं।

श्रीमती सरोज जैन 'जौहरी'
रिटा. प्रोफेसर बॉयो कैमिस्ट्री
एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर

मेरे पिता : यादें

ऐसे तो हर बच्चे को अपने माता–पिता पर गर्व होता है। हम भी बचपन में अपने पिता को किसी हीरो से कम नहीं समझते थे, उनसे अधिक किसी और को कुछ भी नहीं आता है। समय के साथ –विचारों में बदलाव तो आ जाता है, किन्तु उनकी कुछ विशेषताएं वास्तव में बाद में पता चलती हैं।

जबसे मैंने होश संभाला, देखा कि वे लड़कियों को पढ़ाने के पक्षधर थे (उस समय लड़कियों की पढ़ाई पर ध्यान नहीं दिया जाता था) वे हमेशा हमसे कहते थे, खूब पढो, स्कूल–कॉलेज की पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें भी पढ़ो, खूब खेलो तथा दूसरी विधाओं (Activities) में भी भाग लो। खुद एक अच्छे (SportsMan) खिलाड़ी रहे, अतः हमें खेलने के लिए कभी मना नहीं किया। वे बच्चों को मारने के खिलाफ थे। यदि पड़ोस में या आस–पास किसी को मारते देखते तो उसे समझाते। इसके साथ ही वे दूसरों के गुणों के कद्रदान थे। वे कायदे व सलीके से (Systematic) रहते थे। वे बहुत मेहनती थे। उन्हें अच्छे कपड़े पहनने, साफ–सुथरा रहने, घूमने व अच्छा खाना खाने व खिलाने का शौक था। आलस व झूठ पसन्द नहीं था। हमें बहुत अनुशासन में रखा। उस समय हम उनकी सख्ती से नाराज थे, पर बाद में महसूस किया कि यह जरूरी था।

मेरे पिता सच्चे मायने में एक अच्छे Guide (पथ प्रर्दशक) थे, कुछ भी पूछने पर सही–सही मदद करते थे। दिन भर कोर्ट में व्यस्त

रहने के बावजूद रात में 11–12 बजे तक केस तैयार करते थे। उनको हमारी अम्मा का पूरी तरह सहयोग मिला। वे एक पॉजिटिव, खुशमिजाज व जिन्दादिल व्यक्ति थे। अपने सभी रिश्तेदारों से भी अच्छा व्यवहार करते थे। इसलिए उनके प्रिय थे। शादी ब्याहों में ससुराल वालों पर बोझ डालना पंसद नहीं करते थे। वे सबसे अच्छा व्यवहार करते थे।

मैंने एम.एस.सी. (केमेस्ट्री) 1964 में की, तुरन्त मुझे मीरा गर्ल्स कॉलेज, उदयपुर में अध्यापन का कार्य मिल गया। फिर एम.एस.सी. (बायॉकेमेस्ट्री) करने के बाद डिमोस्ट्रेटर के रूप में एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज, जयपुर में नियुक्ति हुई। अन्त में प्रोफेसर के पद पर काम करते हुए वीआरएस लिया। मुझे अपने पिताजी की सीख आज तक काम आ रही है।

मैं, अपने बड़े भाई जस्टिस एन.के.जैन के इस प्रयास की सराहना करती हूं कि वे हमारे पिताजी की याद में उनके संस्मरणों को संकलित कर स्मारिका के रूप में प्रकाशित करा रहे हैं जो समाज को प्रेरणा देने में सहायक होंगे ऐसी मेरी आशा है।

शुभकामनाओं सहित

सरोज – पुत्री

सहयोग एक बहुत ही महंगी चीज है
इसकी हर किसी से उम्मीद नहीं रखें
क्योंकि बहुत ही कम लोग
दिल के धनवान होते हैं।

Meena Ghia
Former Lecturer
KLN College, Jodhpur

An Eulogy

When I look back ,at the years gone by I find “time” flying past with great speed. Some one, has rightly said, that “Time and Tide” waits for no man. This year is my dad's birth century. He left for Heavenly abode at a very young & early age. as compared to the increasing age-growth now a days. He was a man of integrity, intelligence, brimming with wit and wisdom, dedicated and understanding and of course, loving. With all these qualities he was a self-made man, Though coming from a small town of Palam near Delhi, with sheer dint of hard work and knowledge he became a lawyer of great repute and earned both name and fame. Soon he reached to the top.

He became the most respected judge of Rajasthan High Court, Jodhpur. He played Lawn Tennis and went for walks and cut a figure to reckon with in the social circle. He gave us the best education in well-known schools. He wanted to bring out the best in us and stand out in society. He encouraged us to participate in all activities and appreciated our efforts. At times he scolded us for our wrongdoings, and soon forgave us also. He was an ideal and religious person. He was understanding and mattered to all members in the family. He earned great esteem and love from us.

Recalling the past there is smile on my lips and tears in my eyes for the dear departed soul. Though a long time has passed since then. I miss his guidance and presence, but I will never forget the **Sanskars** he has given to us. I pray to the Almighty to keep him cheerful, happy and in peace, wherever he is.

Meena Ghia

Dr. Veena Jain
Zambia

Dad

On this centenary birthday – “Dear Dad, I am thinking of you – how much you meant to us, and all the ways you made such a wonderful difference, in our lives”. We missed you all the years gone by.

I was very unfortunate not to be with him in his last days. I remember, Dad wrote me a letter saying, “he would visit me in Jaipur, on his way from Delhi to Jodhpur”. But due to the floods in that year, on 17^{th} September 1975, we could not meet, and I could not see him again. He had given me his photo, sitting in the court, as a Judge and told me “keep my photo as a remembrance”. His picture will always be embedded in my mind – as a very smart, handsome, immaculate, loving, caring, sharing and honest Dad.

When he came to visit us in school we felt so proud, when the nuns would say “Mr. Jain you are so dashing, and you look younger every time we see you.”

There are a lot of incidents in my childhood memories which made me learn to be strong, truthful, and be respectful towards all teachers, elders, rich or poor. We could also learn from him to work honestly and not to be biased not to tell lie, not to borrow.

He always wanted us to be Post Graduates and took full interest in our education, took time out of his busy schedule and made us read newspapers both in English and Hindi. He Subscribed magazines and books for us for our development. He was a staunch believer of girl's education and was against child marriage.

He taught us to save money, not to misuse, do small chores in the house even with helpers around. Because of all these values, I have been able to survive in Zambia. He was foresighted and would help in solving any problem which we come across in life. Till now whenever a situation like this occurs where I cannot decide, I always look up to him to help me. I feel he is there to help me and solution comes automatically.

I miss you Dad, you would have been very proud to see all your grandchildren trying to emulate you.

Babboo

Dr. Arun Jain
Retired Senior Dental Surgeon

My father, Justice J. P. Jain, was a gem of a person. He was a busy lawyer and we all children hardly got opportunity to meet him, due to his busy schedule. Still, at least, in the evening he used to spend with some time with us regularly.

He was a sportsperson, played tennis and encouraged us too to play. He was a great disciplinarian and wanted us to be punctual, meticulous, and wanted to keep things in their right place always. He also advised us to do things on our own, not depending on others, even though we had servants etc. Whatever small work it was, we all acquired these habits and one more thing which he advised is never forgettable i.e., that we should never keep our palm open for any work from others rather to help others. We should always keep the palm in giving action.

There are many good events of his life to describe. But in short, he was a very affectionate person, loving not only to the children, but all the relatives from distant places also, He helped them monetarily and also kept them with us in the house.

May his teachings pass to the coming generation too.

Dr. Arun Jain

Happiness can not be travelled to, owned, earned, wored or consumed.

Happiness is the spiritual experience of living every minute with love, grace, and gratitude.

अशोक जैन

प्रशासनिक अधिकारी, न्यायिक (सेवानिवृत)
राजस्थान उच्च न्यायालय पीठ, जयपुर

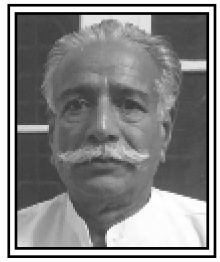

मेरे पूज्य पिताश्री स्व. जस्टिस जे.पी.जैन स्वयं शिक्षा के महत्व को समझते थे। स्वयं भी लोगों को पढ़ाते–पढ़ाते कानून की डिग्री प्राप्त करने के बाद वकील बने। अपनी मेहनत की बदौलत वे अच्छे वकील साबित हुए। अपनी जिम्मेदारी और कार्य में कोताही या लापरवाही आपको बर्दास्त नहीं थी। वे सच्ची निष्ठा, मेहनत, योग्यता, स्नेह, सद्व्यवहार के साथ–साथ अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। सम्भवतः अपने इन्हीं गुणों के कारण वे राजस्थान उच्च न्यायालय में ''न्यायाधीश'' पद पर नियुक्त हुए थे।

आप न्यायपालिका में कार्य के प्रति जितने कठोर व अनुशासनप्रिय थे, उतने ही दिल से नरम भी थे। राजस्थान उच्च न्यायालय के ''न्यायाधीश'' पद पर रहते हुए दिनांक 17/9/1975 को 59 वर्ष की अल्प आयु में आपका आकस्मिक निधन हुआ, लेकिन आज भी आप हमारे साथ हैं।

आपने हम सभी भाई–बहिनों को अच्छे स्कूलों में उच्च स्तरीय शिक्षा दिलाने के साथ–साथ खेलकूद हेतु प्रोत्साहित किया व अच्छे संस्कार दिए, जिससे हमको आत्मनिर्भर, स्वावलंबी एवं सच्चा इन्सान बनने में मदद मिली। मैं सैन्ट जेवियर स्कूल, जयपुर तथा एयरफोर्स स्कूल, जोधपुर में पढ़ा। मुझे बिरला विद्या मन्दिर, नैनीताल में पढ़ने भेजा।

मेरे पिताश्री धार्मिक प्रवृति के इंसान थे। पिताजी के मन में जानवरों व पशु–पक्षियों के प्रति दया की भावना रहती थी। बागवानी

का शौक था। जयपुर में और बाद में जोधपुर में, सरकारी मकान में उन्होंने ग्राफ्टिंग से गुलाब की 300 वैरायटी लगाई थी। उनको परिवार के साथ बाहर घूमने का शौक था। वे हर साल बांदीकुई व श्रीमहावीर जी जाते थे। वे अच्छा खाना खाने व खिलाने का शौक रखते थे। अपना काम स्वयं करते थे। मद्रासियों की तरह लूंगी को ऊंचा उठा कर गाड़ी भी स्वयं साफ करते थे।

मेरे छोटे भाई अनिल को भी बागवानी व जानवरों के प्रति लगाव था। उसी वजह से हमने घर में खरगोश पाला, कुत्ते पाले जयपुर के घर में कबूतर, तोते, मोर छतों पर चुग्गा चुगने आते थे। कई तरह की चिड़ियाओं की चहचाहट से आनन्द की अनुभूति होती थी। लेकिन अब 4–5 सालों से आस–पास बड़े–बड़े मकान बनने के कारण सिर्फ मोर ही हमारे घर के पेड़ों में रहते हैं।

हम सभी भाई–बहिनों ने उनकी अच्छी बातें अपने जीवन में उतारी। अरूणा भाभी ने शादी के 7 साल के समय में ही उनकी काफी अच्छी बातें जिम्मेदारी के साथ अपनी दिनचर्या में शामिल कर, प्रेमभाव बनाये रखते हुए घर को खुशहाल बनाने में मदद की। हम सभी भाई अपने परिवार के साथ रहते हैं पिताजी का आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है।

हम सभी का आपकी जन्म शताब्दी पर कोटि–कोटि नमन।

अशोक जैन

बाधाऐं कब बाँध सकी हैं, आगे बढ़ने वाले को,
विपदाऐं कब रोक सकी हैं, मरकर जीने वालों को।

Justice Nagendra Kumar Jain
Former Chief Justice of Madras &
Karnataka Hight Court

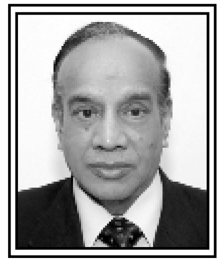

With the Blessings of Acharya Shri Vidhya Nand Ji Muniraj, who has blessed me, for this noble gesture. With immense pleasure, I feel proud and privileged to present this Book to this august gathering on the birth centenary year of my father late Justice J. P. Jain to perpetuate, his loving memory which is evergreen in my heart.

This function is not merely a felicitation of my father's centenary year but it projects the Indian treasure, which lies in its old civilization, admired by European and other countries for the love, affection and reverence we have towards each other, despite of many barriers. We have inherited these qualities, which is a part of our culture. We should adopt and preserve those qualities to encourage younger generation to follow the footsteps of our elders.

I am fortunate that I was born and brought up in such a family. My parents were followers of Jain Principles and not in rituals only. My father was a great sportsman, straight forward and a disciplined person and held in good esteem. He never believed in the policy of appeasement and bereft of any sort of hypocrisy in life.

My father had so many other good qualities; a few of them are simplicity, integrity, fairness, compassion, commitment, passion for work, to treat every body alike, therefore he was a good human being as well. He also advised us to discharge our duties with sincerity and also to behave with others in the same manner as we expect others to behave with us. I have tried to imbibe these qualities in my life. By the grace of God, blessings of my parents and good wishes of you all. I could perform my duties, as per my conscious and to my full satisfaction in various capacities.

My father had amiable personality and because of it, whosoever met him could not forget him in his life. To maintain the position of my father, my pious and contented mother helped and sacrificed at all stages.

I and my family members have no words, to express my sincere thanks to the former Chief Justice of India, Hon'ble Justice M. N. Venkatachaliah, Padmavibhushan, who is well known for his humbleness, grace and hard-work for passing foreword note of this Book. We all express our gratitude to other distinguished Judges namely Justice Dalveer Bhandari, Judge, International Court of Justice, Padmabhushan, Justice T. S. Thakur, Former Chief Justice of India and Judges of Hon'ble Supreme Court and High Court, Senior Advocates and family friends who have faith in preservation,maintenance and furtherance of Rule of Law for their concern and sending their re-collections and reminiscences.

My father and his advice still lives in my mind, reminding at all times, that "you should stay true to your self. And be happy and do not expect any thing from anybody and do not provoke anyone so that your heart be not troubled by anybody." I have always strived to follow the path shown by him.

My cousin brother Mitrsen and my wife Aruna were keen to celebrate birth centenary of my father in year 2017. But unfortunately they are not there in person.

I am also thankful to Shri M. L. Dhonkariya, who inspired me to bring out this Book, on the occasion of my father's 100th birthday, which may inspire the coming generation. Further, I thank Sandeep Shah of Raju Graphic Art, Dr. Chandrika Prasad, K.K. Mittal, Tarun, Veersain, Amarchand Pradeep, Chetan and others who relentlessly worked to bring out this book in a short time.

I hope, the younger generation will take advantage of my father's ideals by adopting them in their life to get all round success.

Sadar Naman.

N. K. Jain

Past President Late Shri J.P. Jain with H.P. Gupta
former Justice B. P. Beri and
Brij Sunder Sharma Minister (Jan., 1969)

Justice J.P. jain with Adv. S.C. Jain, N.K. Jain
S.C. Agarwal, Judges Kansingh, V.P. Tyagi, S.N. Modi (1970)

Hon'ble Judges's wife Mrs. J.P. Jain with Mrs. P.N. Shinghal,
Mrs. N.L. Chhangani, Mrs. Jagatnarain and Mrs. Kansingh (1968)